शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 148 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 23 जून 2024 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

एनटीए में सुधार के लिए 7 सदस्यीय कमेटी का ऐलान

इसरो के पूर्व चेयरमैन राधाकृष्णन चीफ; दो महीने में केंद्र को रिपोर्ट सौंपेगी

नई दिल्ली

शिक्षा मंत्रालय ने शनिवार को परीक्षाओं को पारदर्शी बनाने, सुचारु और निष्पक्ष संचालन सुनिश्चित करने के लिए सात विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। यह समिति दो महीने के भीतर मंत्रालय को अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। विशेषज्ञ पैनल के गठन का कदम राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) परीक्षा 2024 में कथित अनियमितताओं को लेकर उठे विवाद के बीच उठाया गया है। शिक्षा मंत्रालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि समिति परीक्षा प्रक्रिया के तंत्र में सुधार और डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल और एनटीए की संरचना और कार्यप्रणाली में सुधार के लिए सिफारिशें करेगी। इसरो के पूर्व अध्यक्ष और आईआईटी कानपुर के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन सात विशेषज्ञों के पैनल का नेतृत्व करेंगे। टीम के अन्य सदस्यों में एम्स दिल्ली के पूर्व निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीजे राव, आईआईटी मद्रास के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर एमेरिटस प्रो. राममूर्ति के, पीपल स्ट्रॉन्ग के सह-संस्थापक और कर्मयोगी भारत के बोर्ड सदस्य पंकज बंसल, आईआईटी दिल्ली के छात्र मामलों के डीन प्रो. आदित्य मित्तल और शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव गोविंद जायसवाल शामिल हैं। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) के माध्यम से परीक्षाओं को पारदर्शी, सुचारु और निष्पक्ष संचालन सुनिश्चित करने के लिए, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय ने निम्नलिखित पर सिफारिशें करने के लिए विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है।

छापेमारी में बरामद कई दस्तावेज शिक्षा मंत्रालय को सौंपे गए

छापेमारी में बरामद एडमीट कार्ड, जले हुए प्रश्न पत्र के अवशेष की कॉपी समेत अन्य दस्तावेज भी शिक्षा मंत्रालय को सौंपे गए हैं। दूसरी ओर, पेपर लीक मामले की जांच कर रही बिहार पुलिस की आर्थिक अपराध इकाई ने शनिवार को दावा किया कि उसने एनटीए द्वारा आयोजित परीक्षा के संदर्भ प्रश्नपत्र प्राप्त कर लिए हैं। साथ ही पिछले महीने तलाशी अभियान के दौरान पटना के एक फ्लैट से बरामद दस्तावेजों से इनका मिलान करने की योजना बनाई है।

संजीव को एक प्रोफेसर ने वाट्सएप पर प्रश्नपत्र भेजा था

पुलिस ने संजीव की तलाश भी तेज कर दी है। आरोप है कि संजीव को एक प्रोफेसर ने वाट्सएप पर प्रश्नपत्र भेजा था। इसे पटना और रांची के मेडिकल स्टूडेंट की मदद से हल करवाया गया था। इसके बाद पांच मई की सुबह उत्तर के साथ इसे करायपुरसुराय के चिंटू उर्फ बलदेव के मोबाइल पर भेजा गया था। चिंटू की मदद से पिंटू ने इसका प्रिंट निकाला। इसके बाद पटना के एक प्ले स्कूल में ठहराए गए करीब 20-25 अभ्यर्थियों को इस प्रश्नोत्तर को

रटने के लिए भेज दिया। पुलिस ने एकंगरसराय प्रखंड में छापेमारी कर एक व्यक्ति को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है।

गिरफ्तार के डर से फरार हो गया संजीव मुखिया

इधर, उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने जब नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के पीएम प्रीतम कुमार पर की सिफारिश पर निलंबित जूनियर इंजीनियर सिकंदर यादवेंदु के साले के बेटे अनुराग को ठहराया गया था। उसके बाद से मामले में नया मोड़ आ गया है। पर बिहार पुलिस की जांच टीम प्रीतम से भी पूछताछ कर सकती है। वहीं जांच एजेंसी ने नालंदा पुलिस को नोटिस भेजकर संजीव मुखिया को गिरफ्तार करने के लिए भी कहा है। नालंदा पुलिस ने संजीव मुखिया के घर छापेमारी की लेकिन वह फरार था।

बिहार की आर्थिक अपराध इकाई ने केंद्र को सौंपी पेपर लीक मामले की रिपोर्ट

पटना

बिहार की आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) ने नीट पेपर लीक मामले में अपनी रिपोर्ट शनिवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को सौंपी दी। इसमें इस मामले में अब तक गिरफ्तार चार परीक्षार्थियों समेत 13 आरोपितों के बयानों की प्रति दी गई है। इसके अलावा पांच मई को पेपर लीक की सूचना के बाद छापेमारी में बरामद एडमिट कार्ड और जले प्रश्न पत्र के अवशेष की प्रति समेत अन्य दस्तावेज दिये जाएंगे। ईओयू के एक अधिकारी ने बताया कि केंद्र सरकार को अब तक की जांच के बारे में पूरी जानकारी दी गई है। पटना में छापेमारी से बरामद हुए नीट के जले हुए प्रश्न पत्र की कॉपी से लेकर गिरफ्तार आरोपितों के कबूलनामे तक की पूरी जानकारी केंद्र सरकार को दी गई है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय इस रिपोर्ट की समीक्षा करके परीक्षा के बारे में फैसला ले सकता है। इसके अलावा केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इओयू के एडीजी नयर हसनैन खान को दिल्ली बुलाया है। वे एडीजी और एनटीए के शीर्ष अधिकारी के साथ नीट परीक्षा पर समीक्षा करेंगे, जो 25 जून को हो सकती है। ईओयू ने रिपोर्ट में बताया है कि बीते पांच मई को हुई नीट यूजी की परीक्षा से एक दिन पूर्व ही पेपर लीक हो गया था। ईओयू ने बीते शुक्रवार यानी 21 जून तक जांच के आधार पर रिपोर्ट तैयार की है, जिसे शनिवार को उसने शिक्षा मंत्रालय को सौंपी। ईओयू ने इसमें गिरफ्तार 13 आरोपितों के बयानों की प्रति भी जमा की है, जिनमें नीट अभ्यर्थी शामिल हैं। ये सभी अभी पटना के बेऊर जेल में बंद है।

हिमाचल में हो रहे विधानसभा उपचुनाव के लिए भाजपा जिम्मेवार : प्रतिभा सिंह

शिमला

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह ने हिमाचल की तीन विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनाव के लिए विपक्षी दल भाजपा को जिम्मेवार ठहराया है। प्रतिभा सिंह ने भाजपा के उस आरोप को पूरी तरह निराधार बताया है जिसमें वह विधानसभा उप चुनावों के लिये कांग्रेस को दोषी बता रही है। उन्होंने शनिवार को एक बयान में कहा कि भाजपा ने एक षड्यंत्र के तहत प्रदेश की कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने का असफल प्रयास किया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने तीन निर्दलीय विधायको को भी अपने पक्ष में करने को त्यागपत्र देने को उकसाया। यही वजह है कि प्रदेश को इन उप चुनावों का सामना करना पड़ रहा है और इस सबके लिये भाजपा पूरी तरह दोषी है। प्रतिभा सिंह ने पार्टी कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर तीन विधानसभा उप चुनावों में पूरी तरह डट जाने को कहा है। उन्होंने कहा है कि यह चुनाव प्रदेश में लोकतंत्र को बचाने व जनमत को मजबूत करने का मौका है। प्रदेश में जनमत कांग्रेस के पक्ष में है और इसे भाजपा के किसी भी प्रकार के षड्यंत्र से बचाना होगा। प्रतिभा सिंह ने कहा कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार जन कल्याण के प्रति पूरी तरह समर्पित है।

नकली शराब पीने से हुई मौतों के लिए तमिलनाडु की द्रमुक सरकार जिम्मेदार: भाजपा

नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी ने तमिलनाडु में नकली शराब पीने से हुई मौतों के लिए राज्य की द्रमुक सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। पार्टी का कहना है कि मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की सरकार अवैध शराब माफिया को बचाने का काम कर रही है। भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने पत्रकारवार्ता में 53 लोगों की मौत को मानवनिर्मित आपदा बताया है। उन्होंने कहा कि मरने वालों में ज्यादातर दलित हैं। उन्होंने कटाक्ष किया कि क्या तमिलनाडु में जान की कोई कीमत नहीं है। प्रवक्ता ने सवाल पूछा कि राज्य सरकार नकली शराब से होने वाली मौतों पर सीबीआई जांच की अनुमति क्यों नहीं दे रही है।

हरियाणा का 23वां जिला बनेगा गोहाना: मुख्यमंत्री नायब सैनी

कमेटी बनाई है, नॉर्म्स पूरे होते ही गोहाना को जिला बनाने की घोषणा करेंगे, चंडीगढ़ में सीएम आवास नहीं संत कबीर कुटीर है

सोनीपत

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गोहाना में संत कबीरदास जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि प्रदेश का 23वां जिला गोहाना होगा। गोहाना में इसके लिए कमेटी बनाई जा चुकी है। कमेटी के

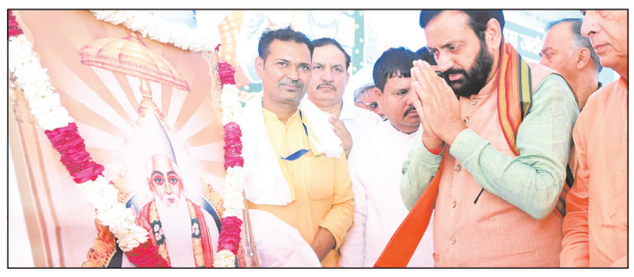

नॉर्म्स पूरे होते ही गोहाना को जिला बनाने की घोषणा कर दी जाएगी। मुख्यमंत्री सैनी ने शनिवार को कहा कि गोहाना से जींद रोड तक बाइपास बनाएंगे, इसके लिए भूमि की तलाश की जा रही है। जल्द ही प्रदेश की एससी और ओबीसी की धर्मशालाओं के लिए भी 100 करोड़ रुपए जारी करेंगे। मुख्यमंत्री ने जिले की धानक समाज की शिक्षा आवास और छात्रावास के लिए 31 लाख रुपये देने की घोषणा की।सीएम ने सभी को संत कबीर दास जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि कबीर वाणी का हर शब्द प्रेरणा देता है।

वैज्ञानिक समुदाय छोटे और सीमांत किसानों के हित में करें कार्य : शिवराज सिंह चौहान

नई दिल्ली

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह ने आज शनिवार को भारतीय कृषि अनुसंधान के पूर्व छात्रों के एक सम्मेलन को संबोधित किया। इस मौके पर उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय से अपील की कि वे छोटे और सीमांत किसानों के हित में कार्य करें। नई दिल्ली स्थित पूसा इंस्टीट्यूट में आयोजित सम्मेलन में अपने संबोधन के दौरान केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि देश को तेलहन और दलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की जरूरत है। इसके साथ किसानों

की आय बढ़ाने के लिए उन्नत तकनीकी की भी जरूरत है। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने कहा कि देश में छोटे और सीमांत किसान 86 प्रतिशत के करीब हैं। ऐसे में खेती का मॉडल ऐसा बनाना पड़ेगा कि एक हेक्टेयर की खेती तक में किसान आसानी से अपनी जीविका चला सकें। उन्होंने यह भी कहा कि हमें कुछ ऐसा रोड मैप बनाना पड़ेगा, जिससे कि भारतीय किसान और कृषि का कल्याण हो सके और भारत को दुनिया का फूड बास्केट बना सकें। साथ ही दुनिया को अन्न खिलाने के लिए निर्यात भी कर सकें। उन्होंने कहा कि कृषि के परिदृश्य को पूरी तरह से बदलना मेरी जिद है। वे किसान और विज्ञान को जोड़ना चाहते हैं। चूंकि, किसानों को हमें विज्ञान से जोड़ना है और इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्र बहुत उपयोगी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का विजन तथा मिशन कृषि के क्षेत्र को आगे बढ़ाना और किसान का कल्याण करना है।

आंध्र के पूर्व सीएम के पार्टी ऑफिस पर चला बुलडोजर

एक दिन पहले घर पर तोड़फोड़ हुई; जगन मोहन बोले- चंद्रबाबू का बर्ताव तानाशाह जैसा

अमरावती

आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी की पार्टी का निमार्णाधीन ऑफिस राज्य सरकार ने बुलडोजर से गिरा दिया है। शनिवार सुबह 5:30 बजे यह कार्रवाई आंध्र प्रदेश राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण ने की। गुंटूर के तड़ेपल्ली में यह आफिस 9,365 वर्ग फीट में बनाया जा रहा था। इस कार्रवाई की टाइमिंग की खूब चर्चा हो रही है। दरअसल, सितंबर 2023 में जब की सरकार थी और जगनमोहन रेड्डी सीएम थे, तब चीफ चंद्रबाबू नायडू को सुबह 6 बजे उनके घर से गिरफ्तार किया गया था। ने भ्रष्टाचार के आरोप में चंद्रबाबू को अरेस्ट किया था। ऑफिस भी 5:30 बजे तोड़ा गया। इससे पहले, हैदराबाद महानगर निगम ने रेड्डी के लोटस पॉन्ड आवास से लगे फुटपाथ पर अवैध निर्माण को तोड़ दिया। इसका उपयोग सुरक्षाकर्मी कर रहे थे। इसके अलावा विशाखापत्तनम ऑफिस के अवैध निर्माण को लेकर एक और नोटिस मिला है। रेड्डी के आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के महज 10 दिन बाद यह कार्रवाई की गई। राज्य सरकार की एजेंसियों की इस कार्रवाई पर जगन मोहन रेड्डी ने कहा- आंध्र प्रदेश के नए मुख्यमंत्री और सुप्रीमो चंद्रबाबू नायडू बदले की राजनीति कर रहे हैं। वे एक तानाशाह की तरह व्यवहार कर रहे हैं।

सरकार ने हाईकोर्ट का निर्देश भी नहीं माना

राज्य सरकार की कार्रवाई पर कहा कि ऑफिस तोड़े जाने से पहले उसमें स्लैब डालने की तैयारी हो रही थी।

जोधपुर के सूरसागर में बवाल के बाद धारा-144 लागू

देर रात भिड़े थे दो पक्ष, आगजनी-पथराव में पुलिसवाले भी घायल; अब तक 15 लोग हिरासत में

जोधपुर

जोधपुर के सूरसागर में शुक्रवार देर रात आगजनी और हिंसा के बाद अब पुलिस ने मामले में 200 लोगों पर एफआआर दर्ज

की है और तोड़फोड़ और आगजनी करने के आरोप में 45 लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। गौरतबल है कि शुक्रवार रात को दो पक्षों में बढ़े विवाद ने हिंसा का रूप ले लिया। मौके पर जमकर कांच की बोतलें और पत्थरबाजी की गई। एक दुकान को आग के हवाले भी कर दिया गया। पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स के जवानों ने मौके पर स्थिति को नियंत्रित किया। वहीं, प्रशासन ने निगम की टीम को बुलाकर मौके से कांच और पत्थर हटवाए। फिलहाल स्थिति तनावपूर्ण है लेकिन धीरे-धीरे सामन्य होने की तरफ बढ़ रही है। पुलिस फोर्स इलाके में गश्त कर रही है। लोगों से शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की जा रही है।

उडी सेक्टर में घुसपैठ की नाकाम, दो आतंकवादी ढेर

बारामुला

बारामूला जिले के उडी सेक्टर के गोहलान इलाके में शनिवार को घुसपैठ की कोशिश को सुरक्षाबलों ने नाकाम कर दिया। आर्तकियों और सुरक्षाबलों के बीच हुई मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए। समाचार लिखे जाने तक मुठभेड़ जारी है।अधिकारियों ने बताया कि उडी के गोहलान इलाके में नियंत्रण रेखा के इस तरफ घुसपैठ की कोशिश कर रहे आतंकवादियों के एक समूह को सतर्क सुरक्षा बलों ने देखा और उन्हें चेतावनी दी। आतंकवादियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है। इस मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने दो आतंकवादियों को मार गिराने में सफलता हासिल की है।

प्रतिष्ठानों के लिए रेंट एग्रीमेंट का किया जाए सरलीकरण: योगी

ई-रजिस्ट्रेशन का कार्य सरकारी एजेंसीज और रेरा अप्रूव्ड संस्थाओं के माध्यम से कराया जाए : सीएम

लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। इस दौरान उन्होंने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन रूल्स 2024 के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश भी दिये। उन्होंने कहा कि ईज ऑफ लिविंग, बेहतर रिकॉर्ड और डाटा मैनेजमेंट के लिए स्टाम्प और रजिस्ट्रेशन की ऑनलाइन व्यवस्था आज की आवश्यक्ता है। इसको लेकर जल्द से जल्द तैयारी की जाए और ड्राफ्ट बनाकर प्रस्तुत किया जाए।

सीएम योगी ने आवासीय, अनावासीय और व्यावसायिक संपत्ति के रेंट एग्रीमेंट के स्टाम्प रजिस्ट्रेशन शुल्क को कम करने के भी निर्देश दिये। इसके लिए अलग अलग ब्रैकेट बनाए जाएं और एग्रीमेंट की प्रक्रिया को सरल किया जाए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन रूल्स 2024 के अंतर्गत मौजूद रजिस्ट्रेशन के कोडिफिकेशन, ई-रजिस्ट्रेशन और ई-फाइलिंग की संपूर्ण व्यवस्था पारदर्शी हो। ई-रजिस्ट्रेशन का कार्य सरकारी एजेंसीज और रेरा अप्रूव्ड संस्थाओं के माध्यम से कराया जाए। वहीं ई-फाइलिंग का कार्य बैंक फाइल 6 (1), 12 माह तक का रेंट एग्रीमेंट और रजिस्ट्रेशन एक्ट 1908 के सेक्शन 18 और 89 के अंतर्गत किसी भी डॉक्युमेंट के माध्यम से कराया जाए। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ई रजिस्ट्रेशन के तहत फेज-1 में सरकारी एजेंसियों-डेवलपमेंट एवं इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटीज को सेल डीड, एग्रीमेंट एवं लीज डीड के लिए मंजूरी प्रदान की जाए। सरकारी एजेंसियों के नोडल अधिकारियों द्वारा प्रस्तुतिकरण और स्वीकृति प्रदान की जाए। साथ ही पार्टियों का फोटो और सिग्नेचर भी डिजिटली या इलेक्ट्रानिकल रूप से किया जाना चाहिए।

उपरोक्त प्रक्रिया के इलेक्ट्रानिक प्रेषित डेटा के आधार पर रजिस्ट्रार अधिकारी द्वारा किया जाएगा। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ई रजिस्ट्रेशन के फेज-2 में सेल डीड, एग्रीमेंट और लीज डीड के लिए रेरा द्वारा अनुमोदित संस्थाओं तक विस्तारित किया जाए। पार्टियों का फोटो और हस्ताक्षर डिजिटल या इलेक्ट्रानिक रूप से किया जाए।

पकरी सेवार गांव में गंगा के किनारे करोड़ों की लागत के प्रोजेक्ट पर...

जल जीवन मिशन में गजा जीएआईपीएल कर रही है भारी अनियमितता

अखंड भारत संदेश

योजना के निर्माण कार्य में श्रम विभाग के नियमों की खुलेआम उड़ रही हैं धज्जियां 14 से 16 वर्ष के बच्चों से कराई जा रही है मजदूरी कार्य

बिना सेफ्टी सूज और कैप के श्रमिक जान जोखिम में डाल कर रहे हैं काम तोड़ी गई सड़कों पर अटी पटी धूल मिट्टी से लोगों का आना जाना हुआ दुश्वार

मेजा। तहसील क्षेत्र के विकास खंड उरूवा के पकरी सेवार गांव में गंगा के किनारे हर घर जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत करोड़ो रुपए की लागत से सतही श्रोत गंगा आधारित ग्राम समूह पेयजल योजना का निर्माण कार्य अधिशासी अभियंता खंड कार्यालय उत्तर प्रदेश जल निगम प्रयागराज द्वारा कराया जा रहा है। इस कार्य में निर्माण कराने के लिए मेसर्स गजा जीएआई पीएल(जेवी)लखनऊ यूपी को कार्यदाई संस्था बनाया गया है। गजा कंम्पनी द्वारा निर्माण कार्य मे घोर अनियमितता बरती जा रही है, कार्य में मानकों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है। मानक की अनदेखी से ग्रामीणों में गहरा आक्रोश व्याप्त है। बता दें कि कंपनी द्वारा निर्माण सहित हर स्तर पर मानक की अनदेखी की जा रही है । कंम्पनी द्वारा पाइप लाइन डालने के नामपर क्षेत्र की सड़कों को तोडा जा रहा है,जिससे आवागमन में बाधा के साथ साथ सड़कों पर उड़ रही धूल से लोगों का जीना मुश्किल हो गया है,कंपनी द्वारा सड़कों पर पानी का छिड़काव भी नहीं कराया जा रहा है । ग्रामीणों ने बताया कि पाइप लाइन डालने के लिए सड़कों को खोदा जा रहा है साथ में लोगों द्वारा खुद से और ग्राम सभा से बनाई गई जल निकासी के लिए नालियों को भी तोड़ दिया जा रहा है,जिससे जल निकासी की भी समस्या पैदा हो गई है । पेयजल योजना के निर्माण कार्य में श्रम विभाग के नियमों की भी धज्जियां उड़ाई जा रही है,निर्माण कार्य में 14 वर्ष से 16 वर्ष के बच्चों से कार्य कराया जा रहा है,जबकि नियम के अनुसार 18 वर्ष की आयु से कम के व्यक्ति से कार्य नहीं कराया जा सकता । निर्माण कार्य मे गजा कंम्पनी द्वारा निर्माण कार्य मे लगे श्रमिकों के सुरक्षा का भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है, कार्य मे श्रमिकों को सेफ्टी सूज और कैप भी नहीं दिया गया है बगैर सेफ्टी सूज और कैप के ही श्रमिक जान जोखिम में डालकर कार्य कर रहे हैं क्योंकि पापी पेट का सवाल है।

थाना मेजा समाधान दिवस तहसीलदार ने सुनी जनसमस्या

मेजा। शासन के मंशा अनरूप शनिवार को थाना मेजा पर थाना समाधान दिवस का आयोजन हुआ।जिसमें तहसीलदार मेजा प्रभात पाण्डेय ने आए हुए फरियादियों की समस्याएं को सुने और मामलो को संबंधित अधिकारियों को जल्द निस्तारण हेतु दिशा-निर्देश दिए।इस दौरान तहसीलदार ने कहा कि राजस्व-पुलिस से संबंधित शिकायतों का निस्तारण आपसी सामंजस्य से सुनिश्चित कराए। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।इस थाना दिवस पर पुलिस व राजस्व से जुड़ी कुल10 शिकायत पत्र आयी जिसमे पुलिस से जुड़ी एक शिकायत पत्रों का निस्तारण किया।वही पुलिस से जुड़ी शिकायतों के निस्तारण में दरोगा बलवंत यादव ने सने औरउन्होंने मामलो जाकर विवादित मामलों का निस्तारण कराने के निर्देश दिए।इस मौके पर दरोगा ब्रजेश यादव, परलोक चौधरी थाने के पुलिस के साथ सभी विभागों के कर्मचारी उपस्थित रहे।

मेजा तहसील मुख्यालय में पेयजल एवं शौचालय की सुविधा नहीं

अखंड भारत संदेश

भीषण गर्मी में बूंद बूंद पानी के लिए तड़प रहे हैं आम जन जिम्मेदार अधिकारी हैं भ्रष्टाचार में लिप्त

मेजा। प्रयागराज जिले के मेजा तहसील में भीषण गर्मी में पीने के लिए पानी और शौचालय जैसी अत्यंत आवश्यक सुविधा की व्यवस्था न होना जहां आम लोगों के लिए परेशानी का एक बड़ा कारण बना हुआ है वहीं तहसील मुख्यालय के आलाधिकारियों भ्रष्टाचार की पोल खोलने के लिए काफी है जबकि देखा जाय तो तहसील कैंपस में सपा के कार्यकाल में मेजा के पूर्व विधायक गामा पांडेय के सौजन्य से टंकी और फ्रीजर मशीन लगाई गई है किन्तु लूटखसोट एवं भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों की अनदेखी के चलते महज एक शो पीस बनकर रह गया है। उल्लेखनीय है कि मेजा तहसील मुख्यालय होने के साथ साथ यहां ग्राम न्यायालय भी संचालित है जिसके कारण वाद करियों की आए दिन काफी भीड़ रहती है। ऐसे में दूर दराज क्षेत्रों से न्याय के लिए आने वाले लोगो एवं वादकारियों को पेयजल तथा शौचालय की भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। गौरतलब है कि इस भीषण गर्मी में प्यास से तड़प रहे लोग बूंद बूंद पानी के लिए तड़प रहे हैं किन्तु तहसील मुख्यालय के जिम्मेदारों को आम लोगों की इस परेशानी का कोई फर्क नही पड़ रहा है। जिम्मेदार अधिकारियों - कर्मचारियों की निगाहें सिर्फ भ्रष्टाचार पर टिकी हुई है। किस मुकदमें की फाइल में कितनी मोटी रकम मिलेगी ? कौन सा क्रेशर प्लांट है जिसकी महीनवारी अभी नहीं आई है ? एनटीपीसी सहित कई अन्य ऐसे विभाग हैं जहां से महीना बंधा हुआ है उनकी नजर वहां पर लगी रहती है। इस संबंध में तहसील परिसर के अधिवक्ताओं ने जिम्मेदारों से मिलकर कई बार लिखित रूप से शिकायत भी किया है लेकिन कोई भी अधिकारी इस भीषण एवं आवश्यक समस्या को सुनने को तैयार तैयार इस लिए नहीं है क्यूकि उन्हें तो सारी व्यवस्था मिली हुई है।

प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री की नीतियों एवं कार्यकर्ताओं के परिश्रम की जीत : डॉ विनोद बिंद

जंघई। प्रतापपुर विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी इंजीनियर घनश्याम पांडेय द्वारा बृज कुंज उत्सव गृह जंघई में शनिवार को नव निर्वाचित भाजपा सांसद भदोही डॉ विनोद कुमार बिंद का स्वागत समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम आयोजक इंजीनियर घनश्याम पांडेय एवं अन्य अतिथियों द्वारा सांसद भदोही का माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। इस अवसर पर सांसद डॉ विनोद बिंद ने कहा कि आप लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आप लोगों ने मुझे मतदान करके विजयी बनाया आप लोगों का मैं जीवन भर ऋणी रहूंगा। और भदोही लोकसभा क्षेत्र के चहुंमुखी एवं सर्वांगीण विकास हेतु मै पूरी उर्जा एवं तन्मयता से कार्य करुंगा, मैं आपके उम्मीदों पर शत प्रतिशत खरा उतरूंगा क्षेत्र की समस्याओं के विषय में पार्टी के पदाधिकारियों, कार्यकताओं समर्थकों एवं आम जनमानस से सहयोग राय मशविरा लेकर कार्य किया जाएगा। क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं के निराकरण एवं विकास हेतु मैं सदैव समर्पित रहूंगा।कार्यक्रम का संचालन सतीश त्रिपाठी प्रधानाचार्य एवं मंडल अध्यक्ष जंघई संदीप गुप्ता तोगड़िया ने किया। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य बृजकुमारी पांडेय, नागेंद्र प्रताप सिंह, चंद्रमणि पांडेय, विनोद पांडेय, डॉ त्रिभुवन नाथ दुबे, शिवधारी दुबे, राममिलन दुबे, जवाहरलाल गौड़, मंडल अध्यक्ष प्रतापपुर कमला शंकर पांडेय, मंडल प्रभारी मनोज सिंह आचार्य, एडवोकेट कुशलेष दुबे मंडल उपाध्यक्ष, आशुतोष पांडेय मंडल महामंत्री, राजू यादव नहटी, डिंपी पांडेय, सीताराम तिवारी प्रधान, आशाराम पांडेय, प्रभात पांडेय, विद्यामनि तिवारी, रमेश पांडेय प्रधान, बच्चन मिश्रा प्रधान, पिंटू मिश्रा प्रधान, आशुतोष त्रिपाठी, देवेंद्र नाथ दुबे, कमलेश दुबे, रामचंद्र मिश्र, मदनलाल जायसवाल, बब्बे सिंह, जिम्मी जायसवाल, प्रमोद मिश्रा, संतोष पांडेय, सतीश दुबे, मनोज दुबे, प्रदीप शर्मा, विशाल राजपूत, कल्लू जायसवाल, बबलू जायसवाल, विवेक जायसवाल, आशीष सरोज, धर्मेंद्र पांडेय, राहुल मिश्रा, रंजीत पांडेय, नीरज पांडेय, किशन पाठक, लल्लन दुबे, विकास यादव बीडीसी, रवि दुबे, विक्की जायसवाल, योगेश मिश्रा, आयुष जायसवाल आदि रहे।

योग शक्ति संतुलन में करता है सुधार : शिवानी सोनी

सेंट पीटर्स स्कूल छतवा की प्रिसिपल ने छुट्टी के मद्देनजर बच्चों को अपने घर पर ही योग करने का दिया आदेश

मेजा। सेंट पीटर स्कूल के विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अपने अपने घरों पर ही योग किया। योग दिवस प्रति वर्ष 21 जून को मनाया जाता है अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उद्देश्य दुनिया भर में योग के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना के लिए मसौदा प्रस्ताव भारत द्वारा प्रस्तावित किया गया था और रिकॉर्ड 175 सदस्य देशों ने इसका समर्थन किया था। श्रीमती शिवानी खेरा सोनी ने छात्रों से इस दिन योग आसन करने और लोगों के बीच दैनिक आधार पर योग करने के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाने का अनुरोध किया क्योंकि योग शक्ति, संतुलन में सुधार करता है।

महिला को अज्ञात बाइक ने जोरदार टक्कर मारी जख्मी

मऊआइमा। सड़क पार कर रही महिला को अज्ञात बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे महिला को गंभीर चोटें आयी है। जिन्हें निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मऊआइमा क्षेत्र के ग्राम सराय रजौत निवासी राम भरोस की 55 वर्षीय पत्नी रामकली सड़क पार करके खेत जा रही थी।बताते हैं कि अज्ञात बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे महिला को गंभीर हालत में निजि अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बाइक सवार भागने में सफल रहा है।

योगाभ्यास कर लोगों ने दिया निरोग रहने का संदेश

अखंड भारत संदेश

कौंधियारा। दसवाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मनाया गया योग दिवस मानव जीवन संक्रमण से बचाव का सबसे बेहतर दवा है अनुलोम विलोम तथा कपालभाति जारी के कृषक इंटर कॉलेज परिसर में सामूहिक रूप से योग दिवस करते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बाजार के व्यापारियों सहित क्षेत्र के लोगों ने योगाभ्यास किया ।जिसमे आरएसएस के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में योग करते दिखें।आरएसएस के मयंक जायसवाल के अगुवाई में कार्यक्रम को दिशा दिया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का लोगों के बीच बहुत महत्व है। यह दिन योग के फायदों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। योग हमारे शारीरिक, मानसिक स?वास?थ?य को ठीक रखने का सबसे सरल व प्रभावी तरीका है। योग के फायदे को बताया रोग मुक्त जीवन जीने की हो चाहत,तो नियमित योगाभ्यास की डालें आदतस्वस्थ जीवन जीना जिंदगी की जमा पूंजी योग करना रोगमुक्त जीवन की कुंजी नहीं होती है उनको कोई बीमारी जो योग करने की करते हैं समझदारी योग प्रकृति का वरदान है, जिसने अपना लिया वो महान है. जो करते हैं योग, उन्हें नहीं छूते रोग,बनकर योगी, खुद से दूर भगाओ रोग योग है स्वास्थ्य के लिए क्रांति, नियमित योग से जीवन में हो सुख शांति.वे रोज योग करते है जिन्हें खुद से प्यार है,अगर आप स्वस्थ्य नहीं है, तो सब बेकार

है। संघ परिवार हिंदू जनमानस कृषक इंटर कॉलेज जारी में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। मुख्यरूप से शिव प्रसाद (मंडल अध्यक्ष) कौधियरा, प्रकाश चंद्र शुक्ला (प्रचंड) ,सेहत केसरवानी, राजू डभौरा ,मनोज कुमार केसरवानी (मुरारी), कपूर अग्रहरि, बबलू केसरवानी, प्रांशु केसरवानी ,बीरन, रमेश, आयुष , किशन, वंश, आदि लोग मौजूद रहे।

सरकारी भूमि पर खड़ी हो रही जेके सीमेंट की फैक्ट्री !

अखंड भारत संदेश

इलाहाबाद हाईकोर्ट की दखल के बावजूद नहीं हटाया जा रहा कब्जा

बेनीपुर के रहने वाले राजू विश्वकर्मा ने दाखिल की थी पीआईएल

बारा। सरकारी भूमि पर आम आदमी के कब्जे के बहुत से मामले आपने सुने होंगे और देखे भी होंगे, पर बारा तहसील क्षेत्र में जेके सीमेंट कंपनी ने सरकारी भूमि पर ही कब्जा कर निर्माण शुरू करवा दिया है। यह कब्जा चकमार्ग व नाली की भूमि से जुड़ा है। मामले की जानकारी होने पर ग्रामीण राजू विश्वकर्मा के द्वारा उच्च न्यायालय की शरण ली गई। राजू की पीआईएल पर उच्च न्यालय उभयपक्षों को सुनने के बाद बारा राजस्व विभाग को मामले का निस्तारण करने के लिए निर्देशित किया था। उच्च न्यायालय ने यह आदेश 27 मई, 2024 को दिया था। राजू विश्वकर्मा का आरोप है कि उच्च न्यायालय के आदेश को लगभग एक माह बीतने जा रहे हैं, बावजूद इसके अभी तक सरकारी भूमि पर किया गया कब्जा हटाया नहीं गया है। राजू विश्वकर्मा ने बताया कि उन्होंने बीते छह जून को उपजिलाधिकारी बारा को एक प्रार्थनापत्र भी दिया था, जिसमें गुहार लगाई थी कि बारा तहसील के मौजा लेदर में चकमार्ग, नाली पर किए गए कब्जे को अविलंब हटाया जाना सुनिश्चित किया जाए। शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम बेनीपुर के रहने वाले राजू विश्वकर्मा का आरोप है कि हाईकोर्ट के स्पष्ट निर्देश के बावजूद तहसीलदार बारा के द्वारा नाली, चकमार्ग, चकरोड आदि पर किए गए कब्जे का निस्तारण नहीं किया जा रहा है। नाली और चकमार्ग आदि पर कब्जा किए जाने से ग्रामीणों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। राजू विश्वकर्मा के द्वारा उठाए गए इस मसले से यह साफ है कि सरकारी संपत्तियों पर कब्जा करने के मामले में निजी कंपनियां भी पीछे नहीं रहती हैं।

ध्यान योगासन का प्रमुख अंग : रमेश केसरवानी

आरएसएस माधव प्रभात शाखा में योग दिवस पर सामूहिक योगाभ्यास का आयोजन

अखंड भारत संदेश

बारा/शंकरगढ़। योग-प्राणायाम न सिर्फ निरोगी काया प्रदान करते हैं, बल्कि यह इंसान को मानसिक रूप से मजबूत बनाते हैं। सोचने-समझने और परिस्थितयों के अनुकूल कार्य करने की क्षमता का सृजन करते हैं। यह बातें योग प्रशिक्षक रमेश केसरवानी ने सामूहिक योगाभ्यास के दौरान कही।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की माधव प्रभात शाखा में शुक्रवार को सुबह योग दिवस मनाया गया। योग शिक्षक रमेश केसरवानी ने योग के महत्व को बताते हुए कई प्रकार के आसन-प्राणायाम का अभ्यास करवाया और योगासनों के करने के समय, इससे होने वाले फायदे भी गिनाए। रमेश केसरवानी ने यहभी बताया कि किस समय किसे योगासन नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा, ध्यान योग का एक प्रमुख हिस्सा है। ध्यान करने से स्पष्ट सोच और आंतरिक शांति मिलती है, जो हमारे व्यस्त जीवन के बीच अमूल्य संतुलन बनाती है। बताया कि योग के असंख्य लाभ हैं। यह हमारे शरीर को अत्यधिक लचीला बनाने में सहायता करता है, मांसपेशियों को मजबूत करता है और जोड़ों को स्वस्थ बनाता है। महर्षि पतंजलि ने योग को 'चित्त की वृत्तियोंह्न के निरोध के रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने 'योगसूत्र' नाम से योगसूत्रों का एक संकलन किया, जिसमें उन्होंने पूर्ण कल्याण और शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शुद्धि के लिए अष्टांग योग का एक मार्ग विस्तार से बताया है। अष्टांग योग को आठ अलग-अलग चरणों वाला मार्ग नहीं समझना चाहिए। यह आठ आयामों वाला मार्ग है, जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। अष्टांग योग के आठ अंगों में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि को समाहित किया गया है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से शाखा कार्यवाह संजय केसरवानी, मूलचंद गुप्ता, डाक्टर अवधेश त्रिपाठी, डॉक्टर प्रेमचंद केसरवानी, नरेंद्र गुप्ता, अरविंद केसरवानी व्यापार मंडल अध्यक्ष शंकरगढ़, महामंत्री पंकज केसरवानी, दीपक नीर, मनोज केसरवानी, अनूप केसरवानी, सुरेश केसरवानी, छेदीलाल कोटार्य, रामानुज गुप्ता, पंकज राय, अंबुज राय आदि मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

आराधना कोचिंग सेंटर में बच्चों ने किया योग

नैनी। नंदन तालाब स्थित आराधना कोचिंग सेंटर नैनी में योग दिवस पर बच्चों ने आराधना श्रीवास्तव एवं संजय श्रीवास्तव के नेतृत्व में योग आसन का अभ्यास किया। इस अवसर पर आराधना श्रीवास्तव ने कहा बच्चों का स्वास्थ ठीक रखने के लिए निरोग रहने के लिए योग का सबसे सरल उपाय है सभी बच्चों को प्रतिदिन योग का अभ्यास करना चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ रहे। संजय श्रीवास्तव ने कहा कि योग से ही पूरे शरीर का निर्माण होता है योग से बच्चे स्वस्थ रहेंगे हमारी दिनचर्या ठीक रहेगी अनेक बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है इस अवसर पर सनी यादव पीयूष यादव अंश यादव अनीका भारतीय प्रिंस यादव देवीका भारतीय अमन कुमार रमन कुमार भावेश मिश्रा मनु पांडे शिव दर्जनों कार्यकताओं में योग का अभ्यास किया।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग प्रमुख सहायक

नैनी। नैनी विश्व योगा दिवस के अवसर पर अवंतिका विकास समिति नैनी के तत्वावधान में दो दिवसीय योगाभ्यास कार्यक्रम का समापन योग दिवस शुक्रवार को बी ब्लॉक स्थित पार्क में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राज्यपाल स्मृतिशेष केशरी नाथ त्रिपाठी की पुत्रवधू कविता त्रिपाठी उपस्थित रही। वहीं कुशल योग प्रशिक्षिका सुनीता जायसवाल, सुषमा विश्वकर्मा एवं शेफाली केसरवानी द्वारा योगाभ्यास कराया गया। योगाभ्यास में पुरुष एवं महिला सदस्यों की सामूहिक सहभागिता रही। महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष मीना जायसवाल ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि कविता त्रिपाठी का कहना था कि शरीर निरोग रखने के लिए योग प्रमुख सहायक है हमे इसे दिनचर्या मे शामिल करना श्रेयश्कर होगा योगाभ्यास कार्यक्रम में प्रमुख रूप से समिति के संयोजक गजेन्द्र प्रताप सिंह, उपाध्यक्ष जगदम्बा प्रसाद शुक्ल, कोषाध्यक्ष अनिल द्विवेदी, महामंत्री सुनील श्रीवास्तव, महिला प्रकोष्ठ की महामंत्री अंजुम नाज, मीडिया प्रभारी आशुतोष मिश्र, ब्लॉक संयोजक गंगा ठाकुर, विजय राठौड़, विकास दुबे, आलोक सिंह , रुबी पाण्डेय, मधू शर्मा, पूनम चौरसिया, नमिता त्रिपाठी, राजकुमारी सिंह, आशा सिंह, गुन्जा केसरवानी, रीता श्रीवास्तव, दीप्ति सक्सेना, सपना सिंह, निधि यादव आदि की सक्रिय सहभागिता रही। अन्त में समिति की उपाध्यक्षा बिन्दु राठौड़ ने प्रतिभागियों को स्वादिष्ट जलपान कराने के साथ सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कबीर के विचार आज भी प्रासंगिक : गजेंद्र प्रताप सिंह

नैनी। नैनी यमुना पार विकास समिति की ओर से शनिवार को समिति के कार्यालय में संत कवि कबीर की जयंती मनाई गई जिसमें उपस्थित वक्ताओं ने कबीर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से चर्चा किया। गोष्ठी में बोलते हुए पत्रकार गजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि कबीर के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और हमें उनके विचारों से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है। कवि पत्रकार जगदंबा प्रसाद शुक्ल ने कहा कि कबीर ने तत्कालीन समाज मे व्याप्त कुरीतियों कुप्रथाओं अंधविश्वास व आडंबर पर जिस तरह करारा प्रहार किया वह अतुलनीय है। सुनील श्रीवास्तव ने कहा कि संत कवि कबीर एक महान युगद्रष्टा व समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज हित मे जो कार्य किया वह अनुसरण करने योग्य है। शिक्षक बद्रीप्रसाद मिश्र ने कबीर को एक महान समाज सुधारक बताते हुए उनके द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने पर बल दिया। गोष्ठी में नौशाद पठान, बीपी सिंह, आशुतोष शुक्ल, आशुतोष मिश्र आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

सहसों ब्लॉक पर सांसद का हुआ जोरदार स्वागत

सहसों। विकास खंड सहसों परिसर में स्वागत समारोह आयोजित कर नवनिर्वाचित सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल का जोरदार स्वागत किया गया। जिसमें ब्लाक प्रमुख गीता सिंह ने पुष्प गुच्छ एवं प्रभु श्री राम की प्रतिमा भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर भाजपा नेता राकेश बहादुर सिंह सहित अन्य लोगों ने माल्यार्पण एवं अंग वस्त्र भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर सांसद प्रवीण पटेल ने कहा जनता जनार्दन की उम्मीद पर खरा उतारूंगा तथा फूलपुर के विकास में कोई कसर नहीं होगी। उन्होंने कहा लोगों को स्वास्थ्य की अच्छी सुविधा मिले इसके लिए एम्स जैसी सुविधा उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता होगी तथा सहसों ब्लॉक की हर समस्या को दूर करने का प्रयत्न शील रहूंगा। इस मौके पर खंड विकास अधिकारी देव कुमार ने वित्तीय वर्ष 2023- 24 का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त क्षेत्र पंचायत सदस्यों से गांव में विकास कार्य के लिए आवेदन मांगे गए। जिस पर सदस्यों ने इंटरलॉकिंग सोलर लाइट,नाली आदि विकास कार्य के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। स्वागत समारोह की अध्यक्षता पूर्व राज्य मंत्री बाबूलाल भंवरा एवं संचालन पवन कुमार शुक्ला ने किया इस मौके पर सांसद पत्नी गोल्डी पटेल, सुरेश चंद्र विश्वकर्मा, शिवनारायण सिंह गप्पू, विजय बहादुर , अजय राना, हेमंत सिंह, रमेश कुमार द्विवेदी, वीरेंद्र बहादुर सिंह, चंद्रभान सिंह, सत्यम सिंह एवं अमन सिंह राजपूत सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

एक वर्षीय ट्रेड डिप्लोमा कोर्स हेतु अभ्यर्थी 20 जुलाई तक करें आवेदन

प्रयागराज। उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, उ0प्र0 लखनऊ के अधीन राजकीय खाद्य विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्र, 13-ए, बेली रोड(जगराम चैराहा) प्रयागराज पर संचालित एक वर्षीय ट्रेड डिप्लोमा कोर्स - कैनिंग एवं खाद्य संरक्षण, बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व कुकरी(पाक कला) सत्र 2024-25 में प्रवेश हेतु निम्नलिखित रोजगारपरक पूर्णकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाने है।विभाग द्वारा एक वर्षीय ट्रेड डिप्लोमा कोर्स - कैनिंग एवं खाद्य संरक्षण, बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व कुकरी(पाक कला) के प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते है, जिसके फार्म का शुल्क रु0. 30/- मात्र है दिनांक 20.07.2024 तक आवेदन पत्र आमंत्रित किये जायेगे। उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु योग्यता कैनिंग एवं खाद्य संरक्षण हेतु इण्टरमीडिएट विज्ञान/कृषि विज्ञान/व्यवसायिक खाद्य संरक्षण से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो। बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व कुकरी(पाक कला) हेतु इण्टरमीडिएट किसी भी विषय से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हों। प्रत्येक कोर्स में मात्र 15 प्रशिक्षार्थियों को मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त एक मासीय बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व कुकरी(पाक कला) तथा एक मासीय सम्मिलित कोर्स(कैनिंग, बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व कुकरी)के भी कोर्स विभाग द्वारा संचालित किये जाते है जिसकी योग्यता हाईस्कूल उत्तीर्ण है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों 25-25 व 50 क्रमशः सीटे है जिसका चयन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर किया जायेगा। प्रवेश हेतु नियम एवं शर्तें(ट्रेड डिप्लोमा हेतु) के अन्तर्गत अभ्यर्थी की आयु-01 जुलाई 2024 को न्यूनतम 18 वर्ष अधिकतम 25 वर्ष, अनुसूचित जाति/जनजाति के अभ्यर्थियों के लिए 28 वर्ष, महिला अभ्यर्थियों के लिए अधिकतम आयु सीमा नहीं है। औद्योगिक इकाईयों से नामित उम्मीदवार को आयु सीमा में 03 वर्ष की छूट देय होगी। आरक्षण-उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत आरक्षण के नियमों का पालन किया जायेगा। आरक्षण लेने वाले अभ्यर्थियों को सक्षम स्तर से निर्गत प्रमाण-पत्र की छायाप्रति प्रस्तुत करना होगा। विलम्ब से प्राप्त अथवा अपूर्ण भरे गये आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा। एक वर्षीय पाठ्यक्रमों के लिए कुल प्रशिक्षण शुल्क रु0 1,500/-(रु0 एक हजार पांच सौ मात्र) है। चयन के उपरान्त प्रवेश शुल्क एक मुश्त जमा करना होगा। एक माह प्रशिक्षण कोर्स हेतु प्रशिक्षण शुल्क रु0 300/- (रु0 तीन सौ मात्र) है। एक वर्षीय पाठ्यक्रमों हेतु प्रॉस्पेक्टस एवं आवेदन पत्र केन्द्र से किन्हीं कार्यदिवसों में नकद रुपया 30/- मात्र का भुगतान करके अथवा 20ग10 सेंटीमीटर आकार का अपना पता लिखा हुआ पोस्टेज स्टैम्प(लिफाफा) भेज कर भी प्राप्त किया जा सकता है। चयन मेरिट के आधार पर किया जायेगा। चयनित अभ्यर्थियों की सूची दिनांक 25/07/2024 को कार्यालय नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर दी जायेगी। इस हेतु अलग से कोई सूचना नहीं दी जायेगी। चयनित अभ्यर्थियों को प्रवेश के समय अपने मूल प्रमाण-पत्र दिखाना अनिवार्य होगा।

राम वाटिका में लगी योग की पाठशाला साधकों ने योगाभ्यास में किया प्रतिभाग

बारा। दसवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर नगर पंचायत शंकरगढ़ के राम वाटिका गेस्ट हाउस में सामूहिक योगाभ्यास किया गया। इसमें कस्बे के दर्जनों योग प्रेमी शामिल हुए। महाराणा प्रताप शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा शंकरगढ़ के राम वाटिका में आयोजित योगाभ्यास में विभिन्न प्रकार के आसनों का प्रयोग कर उसके फायदे गिनाए गए। योग प्रशिक्षक ने लोगों को योग से होने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म फायदों को गिनाया। इस मौके पर दिवाकर सिंह, निखिल केसरवानी, विनीत चतुवेर्दी, वेद प्रकाश गुप्ता, राजेश केसरवानी, राजेंद्र केसरवानी, मसुरिया दीन वर्मा, सुजीत केसरवानी, रोहित केसरवानी, सतीश कुमार विश्वकर्मा, रामजतन बंसल, उमा वर्मा, विजय गुप्ता, महेश कुमार, राजकुमार उर्फ झल्लू केसरवानी, मुन्ना मिश्र, अजय कुमार, पंकज कुमार, मुकेश कुमार, अनुज कुमार,रजत केसरवानी आदि मौजूद रहे।

एसआरएन के आउटसोर्स कर्मचारियों का कार्य बहिष्कार

मार्च से बिना मानदेय के दिन रात काम कर रहे हैं वार्डब्वाय व वार्ड आया, अस्पताल में की नारेबाजी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल के आउटसोर्स पर तैनात वार्डब्वाय और वार्ड आया आज शनिवार को कार्य बहिष्कार कर दिए। यह चार माह से मानदेय न मिलने से आक्रोशित हैं। जीत सिक्योरिटी की ओर से तैनात किए गए इन कर्मचारियों को मार्च से मानदेय नहीं मिला है। लगातार यह एजेंसी के मालिक, अस्पताल के अधीक्षक व मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज की प्राचार्य से मुलाकात करते रहे लेकिन मानदेय नहीं मिला।इससे आज आक्रोशित कर्मचारी प्रदर्शन कर कार्य बहिष्कार पर उतर गए। वार्ड से वह बाहर आ गए और जिम्मेदार अधिकारियों व एजेंसी के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। सुपरवाइजर पद पर तैनात विकास कुमार ने बताया कि इस अस्पताल में 192 लोग आउटसोर्स के तहत रखे गए हैं। दिन रात ड्यूटी करने के बावजूद हमें मानदेय नहीं मिल रहा है। हमारा शोषण किया जा रहा है।

सीएम योगी तक करेंगे इसकी शिकायत

आउटसोर्स के कर्मचारियों ने कहा कि यदि हम लोगों को शीघ्र ही मानदेय नहीं मिलता है तो हम लोग इसके लिए लखनऊ जाकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलेंगे। कर्मचारियों ने आत्मदाह की चेतावनी भी दी है। इनका कहना है कि जब हम लोग मानदेय मांगते हैं तो एजेंसी संचालक कहते हैं अब हमारा टेंडर एसआरएन से खत्म हो गया है।अब ऐसे में सवाल यह उठता है कि यदि एजेंसी के टेंडर चार माह पहले ही खत्म हो गया था तो कर्मचारियों को अंधेरे में क्यों रखा गया? आखिर अब उन्हें मानदेय कौन देगा?

कड़ी ड्यूटी के बाद भी नहीं दिया जा रहा मानदेय

विमला देवी बताती हैं कि हम लोग दिन रात मेहनत कर रहे हैं। लेकिन चार माह से मानदेय नहीं दिया जा रहा है। कोई यह जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है कि हमें मानदेय कब दिया जा रहा है। जीत सिक्योरिटी की तरफ से हम लोग काम कर रहे हैं। ड्यूटी इतनी कड़ी होती है कि 10 मिनट अस्पताल लेट पहुंचने पर अनुपस्थित होना पड़ता है। हम आउटसोर्स के कर्मचारियों को शोषण हो रहा है। हम गांव छोड़कर शहर में रहे हैं। बच्चों की जिम्मेदारी है, लेकिन मानदेय नहीं मिलने से हम लोगों की परेशानी बढ़ गई है।

तरुण गाबा बने प्रयागराज के नए पुलिस कमिश्नर

प्रयागराज। महाकुंभ के पहले प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा का तबादला कर दिया गया है। प्रयागराज के नए पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा बनाए गए हैं। चंडीगढ़ के मूल निवासी गाबा 2001 बैच के आईपीएस अधिकारी है। पहले यह सीबीआई में भी तैनात रह चुके हैं। पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली लागू होने के बाद प्रयागराज के पहले कमिश्नर बनाए गए रमित शर्मा को एडीजी बरेली के पद पर भेजा गया है। सात ही आईपीएस अधिकारी राजेश मिश्र को एसपी कुंभ मेला के पद पर तैनाती दी गई है।

21 नवंबर में मिली थी प्रयागराज की कमान

पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली लागू होने के बाद रमित शर्मा पहले पुलिस कमिश्नर बनाए गए थे। 21 नवंबर को उन्हें पुलिस कमिश्नर नियुक्त किया गया था। रमित शर्मा के कार्यकाल में उमेश पाल हत्याकांड से लेकर माफिया अतीक अहमद और अशरफ की हत्या के अलावा उसके गैंग के कई शूटरों का एनकाउंटर किया गया। साथ ही उनके मकानों पर बुलडोजर चलाने की कार्रवाई की गई।

ज्येष्ठ पूर्णिमा पर संगम में श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई

प्रयागराज। ज्येष्ठ की पूर्णिमा शुभ होता है। शनिवार को ज्येष्ठ पूर्णिमा है और इस दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु संगम पहुंच रहे हैं। इस बार ज्येष्ठ पूर्णिमा 21 जून को शाम से ही लग गया था। तभी शनिवार सुबह तड़के से ही लोग गंगा में स्नान कर रहे हैं। पूजा अर्चना कर चंद्रमा को जल चढ़ा रहे हैं। महिलाएं स्नान के बाद मां गंगा को दीपदान भी कर रही हैं। इस दिन स्नान के बाद दान-पुण्य करना विशेष फलदायी माना जाता है। आज धूप न होने से भी श्रद्धालुओं को संगम तक पहुंचने में कोई असुविधा नहीं हुई। कई श्रद्धालु यहां पुरोहितों से विधि विधान से भगवान सत्यनारायण की कथा भी सुनते दिखे।

व्रत रखती हैं अधिकांश महिलाएं :

ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन अधिकांश महिलाएं सुख-शांति के लिए व्रत भी रहती हैं। इससे घर में धन की देवी का वास होता है। मान्यता है कि ज्येष्ठ पूर्णिमा पर पितरों के लिए गए धूप ध्यान से पितरों को तृप्ति मिलती है और उनकी कृपा घर-परिवार में बनी रहती है। यह भी कहा जाता है कि जो लोग इस विशेष दिन गंगा में स्नान करने नहीं जाते है वह घर में ही स्नान के दौरान गंगाजल मिलाकर स्नान करते हैं, और स्नान के दौरान नदियों और तीर्थों का स्मरण कर लेना चाहिए।इस दिन किसी गोशाला में हरी घास का भी दान कर सकते हैं। गायों के लिए देखभाल के लिए धन का भी दान किया जाता है।

महिला की हत्या के विरोध में प्रदर्शन, सुभाष चौराहे पर चक्काजाम करने का प्रयास

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अतरसुइया थाना क्षेत्र में दो दिन पहले हुई फ्रूटी सोनकर की हत्या के विरोध में इलाके की बड़ी संख्या में महिलाओं ने सुभाष चौराहे पर प्रदर्शन किया। इस दौरान महिलाओं ने चक्काजाम करने का भी प्रयास किया। मौके पर पहुंची पुलिस फोर्स ने किसी तरह से महिलाओं को समझा बुझाकर सड़क से हटाया। इसके बाद महिलाओं ने सुभाष चौराहे से लेकर पत्थर गिरजाघर तक नारेबाजी लगाते हुए पैदल मार्च किया। प्रदर्शन काफी देर तक चला।शाहगंज थाना क्षेत्र के लीडर रोड निवासी रामबाबू सोनकर की बेटी फ्रूटी सोनकर (30) की शादी नौ साल पहले अतरसुइया के बलुआ घाट खटिकान बस्ती निवासी सौरभ संग साथ हुई थी। नौ महीने पहले सौरभ की मौत हो गई थी। फ्रूटी अपने तीन बेटों के साथ ससुराल में रह रही थी। कपिल ने बताया कि रविवार रात नौ बजे बहन ने फोन पर कहा था कि कोटे से गल्ला लेने के बाद दूसरे दिन मायके आएगी। इसी बीच उसका फोन कट गया। दोबारा लगाने पर नंबर बंद आने लगा।सोमवार सुबह पांच बजे बहन के मोबाइल से किसी ने फोन कर बताया कि उसकी मौत हो गई है। इतना कहकर फोन रख दिया। आनन फानन ससुराल पहुंचे तो बहन का शव चारपाई पर पड़ा था। माला टूटकर कपड़े में फंसा था, गले और हाथ पर चोट के निशान थे। उसके बाद वे लोग फ्रूटी को अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

पैसे के लिए उसकी बहन को ससुराल वाले करते थे परेशान

कपिल का आरोप है कि सौरभ की मौत के बाद सास-ससुर, देवर समेत अन्य लोग उसकी बहन से मायके से पैसे लाने के लिए दबाव बनाते थे। न देने पर उसे प्रताड़ित करते थे। प्रताड़ना से परेशान होकर उसकी बहन उनके घर पर चली आई थी। छह महीने पहले उसके ससुर राजू सोनकर यह आश्वासन देकर अपने साथ ले गए थे कि उसे कोई परेशानी नहीं होगी। आरोप है कि रविवार रात ही ससुर राजू, सास राधा, ननद डिंपी, देवर सुमित समेत अन्य लोग मिलकर उसकी बहन पीटे और अंत में गला दबा दिए।

01 जुलाई से 31 जुलाई तक विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं 11 जुलाई से 31 जुलाई तक चलेगा दस्तक अभियान

जिला विकास अधिकारी ने जल-जमाव वाले स्थानों, तालाबों, खाली प्लाटों, झाडियों वाले स्थानों पर साफ-सफाई एवं छिड़काव हेतु आवश्यक कार्यवाही किए जाने के लिए कहा

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में नाले-नालियों की सफाई नियमित रूप से कराये जाने के लिए कहा

प्रयागराज। जिला विकास अधिकारी भोलानाथ कनौजिया की अध्यक्षता में शनिवार को विकास भवन के सभागार में 01 जुलाई से 31 जुलाई तक चलने वाले विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं 11 जुलाई से 31 जुलाई तक चलने वाले दस्तक अभियान की तैयारियों के सम्बंध में जनपद स्तरीय अंन्तर्विभागीय समन्वय समिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिला विकास अधिकारी ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, जिला पंचायतीराज विभाग, नगर विकास विभाग, महिला बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग, शिक्षा विभाग, पशुपालन विभाग, कृषि एवं सिंचाई विभाग, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, उद्यान विभाग, खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग एवं अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारियों से निर्धारित किए गए दायित्वों के सम्बंध में की गयी तैयारियों की जानकारी ली। उन्होंने जल-जमाव वाले क्षेत्रों में एण्टी लार्वा का छिड़काव व आस-पास के नाले-नालियों, गड्ढ़ों की सफाई कराने के निर्देश दिए है। जिला विकास अधिकारी ने संचारी रोगों से बचाव के सम्बंध में पम्पलेट छपाकर हॉटस्पॉट वाले स्थानों पर वितरित करने एवं इन स्थानों पर वर्कशाप का आयोजन कर लोगो को जागरूक करने के लिए कहा है। जिला विकास अधिकारी ने जल-जमाव वाले स्थानों, जल-भराव वाले तालाबों, खाली प्लाटों, झाडियों वाले स्थानों पर विशेष सफाई अभियान चलाये जाने के लिए कहा है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में भी साफ-सफाई का अभियान चलाये जाने के लिए कहा है। जिला विकास अधिकारी ने मच्छर जनित रोगों से बचाव एवं जल-जमाव न होने देने तथा साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिए जाने हेतु नगर निगम, मलेरिया विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा जागरूकता कार्यक्रम चलाये जाने के लिए कहा है। उन्होंने पशुबाड़ों में भी साफ-सफाई की नियमित व्यवस्था सुनिश्चित कराये जाने के लिए कहा है। जिला विकास अधिकारी ने विद्यालयों में जागरूकता कार्यक्रम चलाये जाने के लिए कहा है। शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में साफ-सफाई, जल-जमाव न होने देने तथा अपने घरों के आस-पास साफ-सफाई बनाये रखने हेतु विशेष जागरूकता अभियान चलाये जाने के लिए कहा है। उन्होंने मोहल्ला समिति को अपडेट करने एवं उनके सदस्यों व आशाओं को प्रशिक्षित करने के लिए कहा है। इस अवसर पर जिला मलेरिया अधिकारी ए0के0 सिंह, अपर मुख्य चिकित्साधिकारीगण सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

नैनी के मड़ौका स्थित प्रेरणा परमार्थ आश्रम के संस्थापक भैया जी को आश्रम परिसर में दी गई समाधि

अखंड भारत संदेश

16 जून को गंगा दशहरा के अनुष्ठान के बाद भैया जी की तबीयत एकाएक बिगड़ गई थी

मुंबई ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली

नैनी। नैनी के मड़ौका उपरहार स्थित प्रेरणा परमार्थ आश्रम के संस्थापक सुधीर भैया जी का बुधवार रात मुंबई में इलाज के दौरान निधन हो गया था। शनिवार सुबह आश्रम परिसर में उन्हें समाधि दी गई। इस मौके पर बड़ी संख्या में अनुयाई मौजूद रहे और उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि दी। बुधवार को सुधीर भैया के निधन जानकारी मिलने पर उनके अनुयायियों में शोक की लहर दौड़ गई। उनके पार्थिव शरीर एम्बुलेंस से सड़क मार्ग द्वारा चाका नैनी के समीप स्थित मड़ौका उपहार स्थित आश्रम में शुक्रवार शाम लाया गया। जहां पर उनके अंतिम दर्शन के लिए हजारों की संख्या में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। बता दें कि 16 जून को गंगा दशहरा के अनुष्ठान के बाद भैया जी की तबीयत एकाएक बिगड़ गई थी। प्रयागराज में इलाज के उपरांत बेहतर इलाज के लिए उन्हें मुबंई ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। भैया जी मूलतः झारखंड के पलामू जिला स्थित रेहला के रहने वाले थे। उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद संसारिक मोह माया त्याग कर जन कल्याण के लिए सन्यांस का राह चुना। 8 उन्होंने प्रेरणा परमार्थ आश्रम के माध्यम से सेवा कार्य को आगे बढ़ाया। दीन दुखियों की सेवा को मिशन बना कर काम करने वाले भैया जी दहेज रहित विवाह की परंपरा विकसित करने के लिए सामूहिक विवाह समारोह को बढ़ावा देकर हजारों गरीब कन्याओं की शादी कराई। वह निरंतर अपने सहयोगियों को सेवा कार्य के लिए प्रेरित करते थे। परमपूज्य अघोरेश्वर भगवान राम जी के इस संदेश को सूत्र वाक्य बना कर भैया जी ने समाज के उपेक्षित और पीड़ित जनों की सेवा की।

उन्होंने अघोर परंपरा के मजबूती कै लिए काम किया। प्रयागराज के अलावा भैया जी द्वारा अमर कंटक, हाथीनाला आदि स्थानों पर भी प्रेरणा परमार्थ आश्रम के शाखा की स्थापना की। जहां पर आज भी सेवा कार्य चल रहा है। शनिवार सुबह सबसे पहले उनके पार्थिव शरीर का दर्शन कराया गया। इसके बाद उन्हें गुरु का दर्शन कराने के बाद उन्हें समाधि दी गई हुई। समाधि के बाद बनोरा, छत्तीसगढ़ आश्रम प्रभारी प्रियदर्शी बाबा ने समाधि स्थल के बगल नीम का पौधा लगाया। इसके बाद शोक सभा का आयोजन किया गया।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने मनाया अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन, इलाहाबाद में शुक्रवार को 10 वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर एक योगा कार्यक्रम प्रातः 07:00 बजे से 07:45 बजे के मध्य हाईकोर्ट के क्रिकेट ग्राउण्ड मे संजय पाण्डेय योग प्रशिक्षक के कुशल प्रशिक्षण में सम्पन्न हुआ। योग प्रशिक्षक संजय पाण्डेय जी ने बताया कि देह के व्यायाम की स्थूल क्रियाएँ ही योग नहीं हैं। चित्त की वृत्तियों पर प्रभावी अंकुश योग का मूल है तथा योग एक स्वस्थ और शक्तिशाली समाज बनाता है जहाँ सामूहिक ऊर्जा बहुत अधिक होती है और प्रतिदिन योगा करने से तनाव और चिन्ता कम होती है और आज के आधुनिक युग में प्रतिदिन योग कर आप अपने शरीर को स्वस्थ बना सकते हैं। इसी क्रम में योग कार्यक्रम में हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पदाधिकारीगण एवं भारी संख्या में अधिवक्तागणों ने भाग लिया एवं योग गुरू संजय पाण्डेय जी के द्वारा आसन, कपाल भारती, अनुलोम-विलोम, भ्रामणी प्राणायाम, सूर्य नमस्कार आदि कराया गया।आज के योगा कार्यक्रम में सर्वश्री अनिल तिवारी (वरिष्ठ अधिवक्ता एवं अध्यक्ष), विक्रान्त पाण्डेय (महासचिव), राजेश खरे (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), अग्निहोत्री कुमार त्रिपाठी, अखिलेश कुमार मिश्र, सुभाष चन्द्र यादव, नीरज त्रिपाठी, नीलम शुक्ला (उपाध्यक्षगण), सुमित कुमार श्रीवास्तव (संयुक्त सचिव प्रशासन), अभिजीत कुमार पाण्डेय (संयुक्त सचिव लाइब्रेरी), पुनीत कुमार शुक्ला (संयुक्त सचिव प्रेस), आँचल ओझा (संयुक्त सचिव महिला), रण विजय सिंह (कोषाध्यक्ष), उदिशा त्रिपाठी, कु० मनीषा सिंह, अभिषेक मिश्र, अवधेश कुमार मिश्र, अभिषेक तिवारी, सच्चिदानन्द यादव, दिनेश यादव, राजेश शुक्ला, सर्वेश्वर लाल श्रीवास्तव, वेद प्रकाश ओझा एवं बलदेव शुक्ल (कार्यकारिणी सदस्यगण), जे०एन० मौर्या, वागीश पाण्डेय, आई०के० चौबे, मानव चौरसिया, राम श्याम शंकर पाण्डेय, सुबोध पाण्डेय, पंकज उपाध्याय, विनोद कुमार त्रिपाठी सहित भारी संख्या में अधिवक्तागण उपस्थित रहे।

धूमधाम से मनाया गया योग दिवस

झूंसी। क्षेत्र में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के साथ स्कूल कॉलेज में शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस धूमधाम से मनाया गया। सरोज विद्या शंकर इंटर कॉलेज में 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग शिक्षक अमित कुमार जैन के नेतृत्व में सूर्य नमस्कार से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। योग शिक्षक ने सूर्य नमस्कार कराया और योग के महत्व को बताते हुए कहा कि हमें याद रखना चाहिए कि योग केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह एक जीवन पद्धति है। विद्यालय के संस्थापक विद्याशंकर तिवारी के मार्गदर्शन सभी शिक्षकों ने व्यायाम योग,तिष्ठ योग, आसन, प्राणायाम और ध्यान किया। विद्यालय के प्रबंधक डॉ. दुर्गा प्रसाद मणि त्रिपाठी, प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार त्रिपाठी सहित सभी शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित नहीं। वही विजय हॉकी ग्रुप की ओर से त्रिवेणीपुरम ग्राउंड में खिलाड़ियों में योग दिवस पर योग अभ्यास किया। महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय में भी योग दिवस उत्साह के साथ मनाया गया।

महर्षि महेश योगी आश्रम में योग दिवस के अवसर पर योग अभ्यास कराया गया

नैनी। नैनी अरैल महर्षि महेश योगी आश्रम में योग दिवस के अवसर पर योग अभ्यास कराया गया आश्रम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव आश्रम प्रभारी बसंत दास की नेतृत्व में 1100 विद्वान पंडितों के द्वारा ज्ञान एवं योग आसन का अभ्यास प्रतिदिन महर्षी आश्रम में कराया जाता है योग दिवस के शुभ अवसर पर सख्त निर्देश के साथ ध्यान हाल परिसर में 1100 पंडितों के द्वारा योग किया गया इस अवसर पर आश्रम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव बसंत दास ने कहा योग ही मात्रा उपाय है जो शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है जिससे अनेक प्रकार की बीमारियों को काबू में किया जा सकता है योग सबसे सरल उपाय है इसमें किसी को एक पैसा भी नहीं लगता अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य करके अपने जीवन को सफल बनाए इस अवसर पर ऋषि त्रिवेदी विमल मिश्रा आज जितेंद्र दास जयप्रकाश तिवारी आचार्य एवं विद्वान पंडित उपस्थित थे।

सड़कों का चौड़ीकरण से व्यापारियों को लाखों का नुकसान हुआ

अखंड भारत संदेश

मुख्यमंत्री से व्यापारियों ने पत्र लिखकर मुआवजे की मांग किया है

नैनी। नैनी व्यापार मंडल महामंत्री एवं भाजपा नेता घनश्याम जायसवाल ने एक पत्र के माध्यम से संपूर्ण नैनी क्षेत्र में महाकुंभ 2025 की तैयारी को लेकर शहर की तमाम सड़कों का चौड़ीकरण किया जा रहा है। वहीं नैनी में किये जा रहे ध्वस्तीकरण से व्यापारियों को लाखों का नुकसान हुआ है। अब व्यापारी इस नुकसान की भरपाई के लिए सीएम योगी को पत्र लिखकर गुहार लगा रहे हैं। नैनी स्टेशन रोड से लेकर मेवालाल की बगिया तक सड़क चौड़ीकरण के लिए किये गये ध्वस्तीकरण में हजारों व्यापारियों को लाखों का नुकसान हुआ है। इसमें कोई चाय की दुकान तो कोई कपड़े और जूते व बर्तन का व्यापारी है। ध्वस्तीकरण में इन व्यापारियों की दुकान के साथ मकान का आधा हिस्सा गिरा दिया गया। जिससे इनके करोबार पर बड़ा असर पड़ा है। शनिवार को सभी व्यापारियों ने एक जुट होकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुआवजे की मांग की है। व्यापार मंडल महामंत्री एवं भाजपा नेता घनश्याम जायसवाल ने एक पत्र के माध्यम से संपूर्ण नैनी क्षेत्र के व्यापारियों के लिए मुआवजे की मांग की है। उन्होंने बताया कि स्टेशन रोड, कसाई मोहल्ला, जेल रोड, खारकोनी, लोकपुर ,अरैल, नई बाजार इन स्थानों पर पीडीए द्वारा चौड़ीकरण का कार्य हो रहा है। जिसमें मकान दुकान तोड़े गए एवं लोगों का एक लाख से लेकर पांच लाख तक का नुकसान हुआ। सैकड़ो व्यापारी बेघर हो गए। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मांग है की प्रयागराज के जिला अधिकारी से जांच कराते हुए व्यापारियों को उचित मुआवजा दिया जाए। आज हर व्यापारी चार से पांच लाख के कर्ज में डूबा हुआ है। चौड़ीकरण के चलते पांच माह से पूरा व्यापार ठप पड़ा हुआ है। मांग करने वालों में नैनी व्यापार मंडल महामंत्री एवं भाजपा नेता घनश्याम जायसवाल, माधव विश्वकर्मा, डॉक्टर राकेश विश्वकर्मा, मनोज गुप्ता ,फूलचंद केसरवानी, हरिश्चंद्र कनौजिया, राजू केसरवानी, सुरेश केसरवानी, मुन्ना पटेल, राजेश यादव, कांति गुप्ता, राजेश अग्रवाल, नौसाद सिद्धीकी आदि तमाम लोग शामिल है।

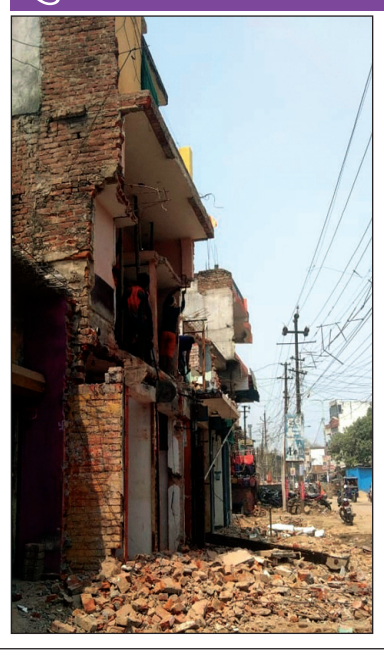

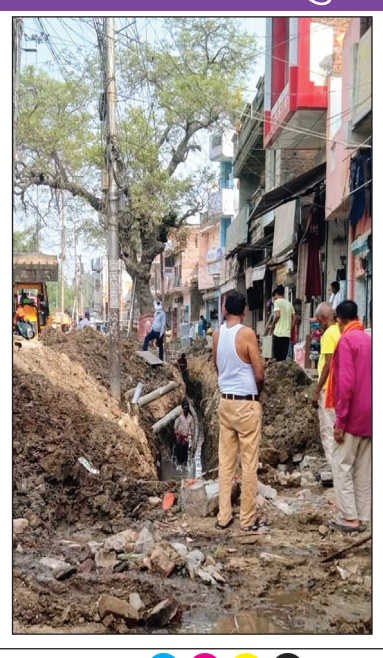

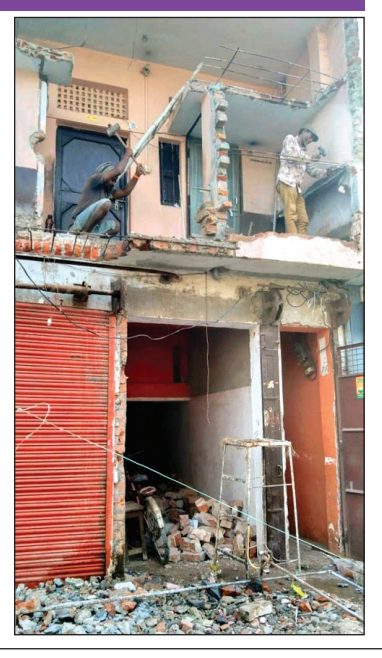

सरकारी जमीनों पर किये गये अवैध कब्जे खाली कराया जाए: जिलाधिकारी

डीएम एवं एसपी ने थाना समाधान दिवस पर लालगंज थाना में सुनी फरियादियों की समस्यायें

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन एवं पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना लालगंज में पहुॅचकर दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु निर्देश दिये। थाना समाधान दिवस में कुल 17 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से 01 शिकायत का मौके पर निस्तारण किया गया। थाना समाधान दिवस में शिकायतकर्ता ने डा0 जगत वर्मा निवासी ग्राम पड़री ने शिकायत किया कि प्रार्थी के आने जाने वाले चकरोड पर खड़न्जा व मरम्मत के दौरान इलाके का एक हिस्ट्रीशीटर जो आपराधिक प्रकृति का है मार्ग निर्माण में बाधा उत्पन्न कर रहा है, बीतें दिनो प्रधान पति व दर्जन भर मजदूरों को मार्ग निर्माण के दौरान गाली गुप्ता देकर भाग दिया था, शिकायतकर्ता ने चकमार्ग को दबंगों से खाली करवाने हेतु प्रार्थना पत्र दिया है, इस प्रकरण जिलाधिकारी ने राजस्व निरीक्षक एवं एसएचओ लालगंज को निर्देशित किया कि चकमार्ग की पैमाईश कराकर आवश्यक कार्यवाही करें।

समाधान दिवस पर समस्याएं सुनते जिलाधिकारी व सतपाल अंतिल।

थाना समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों के निस्तारण के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने पुलिस अधिकारियों/तहसीलदार/राजस्व निरीक्षक/लेखपाल को निर्देशित किया कि शिकायतों की जांच कर आवश्यक कार्यवाही की जाये। उन्होने निर्देशित किया कि राजस्व सम्बन्धित प्रकरणों कों पुलिस विभाग व राजस्व विभाग की संयुक्त टीम मौके पर जाकर बिना किसी पक्षपात के सम्बन्धित शिकायतों का जल्द से जल्द निस्तारण करायें। जिलाधिकारी ने लेखपालों व अन्य सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिन सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जे किये गये है उसे खाली कराया जाये। उन्होने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई के दौरान जो शिकायतों प्राप्त होती है उनका निस्तारण शासन की मंशा के अनुरूप व गुणवत्तापूर्ण कराया जाये ताकि फरियादियों को बार-बार अपनी शिकायतों को लेकर इधर-उधर भटकना न पड़े। जिलाधिकारी ने कहा कि जो फरियादी भी अपनी समस्या लेकर आये उनकी शिकायतों को गम्भीरता से सुनें, इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं उदासीनता कदापि न बरती जाये। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने कहा कि पुलिस थाने में आये हुये फरियादियों से सम्मानपूर्वक व्यवहार करें, उनकी शिकायतों को सावधानीपूर्वक सुने तथा जल्द से जल्द उनकी शिकायतों का निस्तारण करायें।

समस्याओं के निस्तारण में लापरवाही से खफा वकीलों ने डीएम व एसपी को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तहसील में विभिन्न समस्याओं के निस्तारण में लापरवाही से खफा वकीलों ने शनिवार को डीएम तथा एसपी को मांग पत्र सौंपा। लालगंज में समाधान दिवस में डीएम संजीव रंजन तथा एसपी सतपाल अंतिल के पहुंचने की सूचना तहसील में वकीलो को हुई। जानकारी मिलने पर अधिवक्ताओं ने समाधान दिवस समाप्त होने के बाद डीएम तथा एसपी से मुलाकात कर विभिन्न समस्याओं को लेकर मांग पत्र सौंपा। संयुक्त अधिवक्ता संघ के महामंत्री सूर्यकांत निराला तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष विभाकर नाथ शुक्ल व पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल की अगुवाई में अधिवक्ताओं ने डीएम को बताया कि बार बार शिकायत करने के बावजूद परिसर में नियमित साफ सफाई के प्रबन्ध न के बराबर है। वही परिसर में शौचालयों के चोक होने को लेकर भी वकीलों ने एसडीएम की अनसुनी पर नाराजगी जतायी। पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने डीएम व एसपी को बताया कि प्रशासन की अनदेखी से अधिवक्ताओं का भी लगातार उत्पीड़न जारी है। वही अधिवक्ताओं ने एसडीएम प्रवीण द्विवेदी की कार्यशैली को भी नागवार बताया। डीएम संजीव रंजन ने तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह को ज्ञापन से जुडे बिंदुओं का समुचित निस्तारण कराए जाने के निर्देश दिये। इस मौके पर पूर्व महामंत्री संतोष पाण्डेय, सिंटू मिश्र, संतोष सिंह, घनश्याम मिश्र, विपिन शुक्ल, टीपी यादव, शैलेन्द्र शुक्ला, शिवेन्द्र तिवारी आदि अधिवक्ता रहे।

राहगीरों को गर्मी से राहत के लिए पिलाया गया शरबत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर के बाबागंज स्थित दीनदयाल उपाध्याय परिसर के सामने शनिवार को जेष्ठ महीने के अंतिम शनिवार (पूर्णिमा) को राहगीरों को निशुल्क शरबत का वितरण किया गया।

शरबत वितरण का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य एवं विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ भाजपा नेता संतोष मिश्रा ने राम दरबार की तस्वीर पर माल्यार्पण करके किया। इसके बाद लोगों को शरबत का वितरण प्रारंभ हुआ। सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने कहा कि इस तरह के कार्य से लोगों में मानवता की भावना का जन्म देती है। भाजपा नेता संतोष मिश्रा ने लोगों के इस कार्य की सराहना की। मार्केट के कारोबारी एवं प्रतिष्ठानों में काम करने वाले लोगों ने स्वयंसेवक के रूप में राहगीरों को रोक रोक करके शरबत पिलाया।

राम दरबार तस्वीर पर माल्यार्पण करते सदर विधायक राजेंद्र मौर्य व भाजपा नेता संतोष मिश्रा।

लगभग तीन घंटे तक चले इस शरबत वितरण करने वालों में प्रमुख लोगों में पत्रकार रमेश राम नाथ यादव, राजेन्द्र पाण्डेय, रमेश त्रिपाठी, परितोष मिश्रा, अचलपुर सभासद आशुतोष सिंह, तुषार दत्त मिश्रा सभासद दहिलामऊ, धीरज सिंह सभासद मीरा भवन, सुनील दुबे, दिव्य द्विवेदी, राज द्विवेदी, मानवेंद्र मिश्रा, सत्यम मिश्र, पूर्व सभासद सुधाकर सिंह, शौलून ऐशोसियेशन के जिला अध्यक्ष महेंद्र कुमार शर्मा, जैकी यादव, अंबार मिस्त्री, अंकुर जायसवाल सहित अन्य लोग रहे।

भीषण गर्मी में शीतल जल देने वाला वाटर एटीएम बना शो पीस, जिम्मेदार अधिकारी नहीं उठा रहे कोई कदम

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जल ही जीवन है और बिना जल के जीवन संभव नहीं है।आप सबको यह इसलिए बता रहे हैं कि आप सब जाने की पट्टी नगर पंचायत द्वारा बनाया गया वाटर एटीएम पानी देने के बजाय केवल शोपीस बनकर रह गया है। नगर पंचायत द्वारा लगाए गए वाटर एटीएम में पानी आए यह जरूरी नहीं है लेकिन सरकार के पैसे को बट्टा लगा दिया जाए यह जरूरी है। जी हां आप सही सुन रहे हैं सरकार के लाखों रुपए खर्च करके वाटर एटीएम तो लगा दिया गया लेकिन इसमें कुछ दिनों तक पानी यदा कदा ही आया तो वाटर एटीएम केवल शोपीस बनकर ही रह गया।

पट्टी नगर पंचायत द्वारा दो वाटर एटीएम लगाया गया जिसमें से एक तहसील के बगल व दूसरा बाईपास रोड स्थित एलआईसी ऑफिस के समीप लगाया गया लेकिन लगने के कुछ दिनों तक ही वाटर एटीएम से पानी आया उसके

शोपीस बना वाटर एटीएम।

बाद तो यह केवल शो पीस में तब्दील हो गया। नगर पंचायत द्वारा दो प्याऊ का निर्माण बीते कुछ वर्ष पहले कराया गया,एक प्याऊ नगर के चमन चैराहे पर व दूसरे का निर्माण पट्टी पीजी कॉलेज के बगल में किया गया।चमन चैराहा स्थित प्याऊ आज आप को दिखाई ही नहीं देगा क्योंकि उस पर ट्रांसफार्मर रख दिया गया है।पीजी कॉलेज के बगल बना प्याऊ इस गर्मी में शीतल जल देने के बजाय आग उगल रहा है जबकि प्याऊ पर लिखा है पीने योग्य शीतल जल। जिम्मेदार भी वाटर एटीएम ठीक करने की जहमत नहीं लेते।शिकायत करने पर कागजी कोरम पूरा कर मरम्मत का पैसा भी वसूल लिया जाता है। समाचार पत्र के संवादाता ने मौके पर जाकर देखा तो वाटर एटीएम हाफ्ता नजर आया वाटर एटीएम में पानी सालों से नहीं आया। पट्टी तहसील परिसर में अधिवक्ता का कार्य करने वाले एडवोकेट शिवकुमार पटेल ने बताया कि वाटर एटीएम में पानी आता ही नहीं।तहसील परिसर में मौजूद अधिवक्ताओं को भी ठंडे पानी के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। इस मामले में जब नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी महेंद्र सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि कई बार मरम्मत का कार्य कराया गया लेकिन मशीनें पुरानी होने के चलते बार बार खराब हो जा रही हैं। नया वाटर एटीएम जल्द ही नगर पंचायत द्वारा लगवाया जाएगा।

लोगों की समस्याएं सुनते एमएलसी गोपाल भैया।

एमएलसी गोपाल भैया ने बाबूगंज कार्यालय पर सुनी लोगों की समस्या

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। जनसत्ता दल के शीर्ष नेताओ मे एक और प्रतापगढ़ के विधान परिषद सदस्य अक्षय प्रताप सिंह गोपाल भैया ने आज बाबूगंज कार्यालय पर लोगों की समस्या सुनी, मौके पर उन्होंने सम्बन्धित अधिकारिओं को जन समस्याओं के निस्तारण के लिए फोन करके उसे दूर करने को कहा। राजा भैया की अनुपस्थिति मे भी जनसत्ता दल लोगों की समस्याओं को लेकर संजीदा रहता है ताकि क्षेत्र की जनता को किसी भी प्रकार से दिक्कत न होने पाए। गोपाल भैया ने दर्जनों लोगों की उन समस्याओं पर अधिकारियो को फोन से अवगत कराते हुए उसके निस्तारण का निर्देश दिया। इस मौके पर बाबागंज के विधायक विनोद सरोज, पार्टी के महासचिव डा जे इन ओझा, बिहार के ब्लाक प्रमुख राम चंद्र सरोज, पूर्व प्रमुख प्रफुल्ल सिंह, जिला पंचायत सदस्य विनोद पटेल, क्षीर सागर तिवारी, नीरज सिंह, विजय पांडे, इन्नू भाई, विनोद मिश्रा पत्रकार, नीलमणि सिंह प्रधान, संजय सिंह बच्छरौली, बब्बू शुक्ला, ओपी सरोज समेत कई लोग मौजूद रहे।

शाम को बरसा पानी, भीषण गर्मी से मिली राहत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दो-तीन दिनों से मौसम बदल गया है। भीषण गर्मी से राहत मिली है। अधिकतम तापमान भी 40 डिग्री से नीचे आ गया है। दो दिनों से सुबह धूप का असर कम रहता है। प्रायः बादल छाये रहते हैं। बता दें कि आसपास जिलों सुल्तानपुर, अमेठी, प्रयागराज व जिले के पट्टी क्षेत्र में वर्षा भी हुई है। इससे वातावरण नम हुआ है। प्रतापगढ़ शहर में आज शनिवार की शाम को वर्षा हुई। यह पहली वर्षा होने के कारण जलती धरती ने पानी को सोख लिया। लगातार वर्षा होने से वातावरण और नम होगा। सुबह बादल छाया रहता है लेकिन दूसरी बेला में तेज धूप होती है। इसी से पारा में कभी-कभी बढ़ोत्तरी हो जाती है। जैसे कल अधिकतम तापमान 35 डिग्री और आज अधिकतम पारा 39 डिग्री पहुंच गया है। रात में ठंडी हवा चलती है, इससे भी गर्मी में राहत मिली हुई है। इस वर्ष नौतपा और बाद मिरगिसरा में प्रतापगढ़ का तापमान 46 से 47 डिग्री के बीच था। इसी की चपेट में आने से लोग बीमार पड़े।

छेड़खानी व धमकाने को लेकर दी तहरीर, छानबीन में जुटी खाकी

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर थाना क्षेत्र की एक पीड़िता ने मकान मालिक पर बदनीयती से अश्लील हरकत व धमकी दिये जाने के आरोप को लेकर तहरीर दी है। लीलापुर थाना के सगरा सुंदरपुर मोती का पुरवा निवासी राजेश सरोज की पत्नी कंचन सरोज ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती उन्नींस जून को वह अपनी दुकान पर बैठी थी। इस बीच आरोपी मकान मालिक किराये के बहाने दुकान के अंदर घुस आये। पीडिता को अकेला देख आरोपी उसके साथ अश्लील हरकत करने लगे। शोर सुनकर पीडिता की पुत्री पहुंची तो उसकी चीखपुकार पर आसपास के लोग जुटने लगे। आरोपी ने पीड़िता को पुलिस में शिकायत करने पर जानलेवा धमकी दी है।

हीट वेव की चपेट में आए हुए युवक की हुई मौत

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आसपुर देवसरा क्षेत्र के करौदहा गांव के रहने वाले अभयराज पुत्र चैथीं राम उम्र (48) वर्ष की इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक अभय राज अमरगढ़ से महराजगंज जौनपुर के बीच अपना निजी टेंपू चलाता था। बीते रविवार को भी अभयराज रोज कि तरह दिन भर टेंपू चलाने के बाद देर शाम को वह अपने घर पहुंचा, लेकिन रात में एकाएक उसकी तबियत बिगड़ने लगी घरवालों ने तत्काल अभयराज को लेकर बदलापुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ, जिसके बाद अभयराज को जौनपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया वहां पर अभयराज की हालत और बिगड़ने लगी तब घरवालों ने अभयराज को लेकर प्रयागराज गये जहां पर इलाज के दौरान शुक्रवार की सुबह चार बजे अभयराज की मौत हो गई। मौत की खबर घर पर पहुंचते ही मातम पसर गया,मृतक के कुल छः बच्चे हैं जिनमें तीन बेटे नीरज 25 बर्ष,सूरज 19 बर्ष, सनी 16 बर्ष है। बड़ा बेटा नीरज की शादी हो चुकी है। बेटी विंदू, पिंकी की शादी हो चुकी है, आरती की शादी होना अभी बाकी है।मृतक की पत्नी केवला का रो रोकर बुरा हाल हो गया। मृतक अभयराज का अंतिम दाह संस्कार इब्राहिमपुर घाट पर किया गया।

कबीर जयंती पर सृजना साहित्यिक संस्था ने आयोजित किया कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में सृजना कुटीर अजीतनगर में कबीरदास की जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर कबीरदास के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि कबीरदास आम जनमानस की आवाज थे। सामाजिक कुरीतियों पर निष्पक्षता से अपनी कलम चलाकर कबीर ने समाज में जनजागृति का कार्य किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी रोशनलाल ऊमरवैश्य ने कहा कि कबीरदास ने स्वस्थ एवं मानवतावादी

कबीरदास की चित्र पर माल्यार्पण करते संस्था के पदाधिकारी।

समाज के निर्माण में बेहद अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अम्मा साहब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनंद मोहन ओझा ने कहा कि कबीरदास ने आमजन के मुद्दों पर खुलकर अपने विचार रखे। कबीरवाणी प्रत्येक परिस्थिति में यथार्थपरक है। कार्यक्रम में वरिष्ठ कहानीकार प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम, श्रीनाथ मौर्य सरस, कुंजबिहारी काकाश्री, अनिल कुमार निलय, राधेश्याम दीवाना, विवेक, महेन्द्र कुमार आदि ने कबीरदास के विषय में अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अनिल कुमार निलय ने किया।

विश्व योग दिवस के अवसर पर आयोजित हुआ योग शिविर

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। अंतर्राष्ट्रीय 10वें विश्व योग दिवस के अवसर पर शुक्रवार को दिव्य ज्योति सेवा संस्थान स्वामी विवेकानन्द समाज कल्याण समिति एवं सक्षम फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में योग शिविर का आयोजन बन्दना टाकीज गेस्ट हाउस परिसर कुण्डा में किया गया। योग शिविर का उद्घाटन दिव्य ज्योति सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉ रणजीत सिंह एवं स्वामी विवेकानन्द समाज कल्याण समिति के सचिव डॉ विष्णु कुमार पाण्डेय ने संयुक्त रूप से किया। योग शिविर में आये हुए सहभागियों को सम्बोधित करते हुए हुए डॉ डॉ रणजीत सिंह ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ही सबसे पहले अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाये जाने का विचार दिया था। स्वामी विवेकानन्द समाज कल्याण समिति के सचिव डॉ विष्णु

योगा करते दिव्य ज्योति सेवा संस्थान के पदाधिकारी।

कुमार पाण्डेय ने कहा कि योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के युज से हुई जिसका मतलब होता है कि आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन। इस अवसर पर दिव्य ज्योति सेवा संस्थान एवं सक्षम फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ रणजीत सिंह, मनीश सिंह एडवोकेट, डॉ विष्णु कुमार पाण्डेय, चिकित्सक डॉ विनोद कुमार गुप्ता, हर्षित, विवेक, यश, अमरजीत, बृजेन्द्र, शोभिता सिंह, शमा गुप्ता, दीपा आदि लोग उपस्थित होकर योग एवं प्राणायाम सीखा एवं किया तथा संस्थान के स्वयं सेवकों ने योग शिविर आयोजित कराने में अपना योगदान किया।

भण्डारे में श्रद्धालुओं ने ग्रहण किया प्रसाद

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के ढ़िगवस गांव में शनिवार को हुए भण्डारे में श्रद्धालुओं ने भगवान द्वारिकाधीश का महाप्रसाद ग्रहण किया। प्रयागराज के धर्मगुरू आचार्य देवव्रत जी के वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य भगवान श्रीकृष्ण का विधिविधान से पूजन अर्चन हुआ। भण्डारे का संयोजन रामप्रताप पाण्डेय व बीडीसी संतोष पाण्डेय ने किया। इस मौके पर मोनू पाण्डेय, रामकुमार पाण्डेय, हरीश मिश्र, रज्जन मिश्र, हरिशंकर द्विवेदी, शिवाकांत शुक्ल, आद्या प्रसाद शुक्ल, निर्मला पाण्डेय आदि रहे।

देवरपट्टी में तालाब तो खोद डाला लेकिन नहीं बनायी सुरक्षा दीवार

लोगों की जान का खतरा बनी

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। जिले से निकलने वाले राम वन गमन मार्ग में लगे वाली लाखों क्यूबिक मीटर मिट्टी की तलाश में गांव गिराव में अदृश्य तालाबों की खुदाई बड़े पैमाने पर कर दी गयी।

बिहार ब्लाक के देवरपट्टी गांव के झंडापुर के सामने लगभग 12 बीघे जमीन पर गहरा तालाब खोद दिया गया और इससे निकलने वाली मिट्टी से रामबन मार्ग मे लगायी गयी।

हालांकि कार्यदायी एजेंसी ने इसके लिए संबंधित तहसील के उप जिलाधिकारी से अनुमति भी लिया। लेकिन यही पर खेल हो गया की एक तो मानक से गहरे तालाब की खुदाई हो गयी दूजे तालाब खोद कर बिना उसके चारो तरफ सुरक्षा दीवार बनाये बिना ही ठेकेदार अपने साजो सामान को समेटकर भाग निकला। अब यदि किसी के साथ कोई दुर्घटना होती है तो इसका जिम्मेदार कौन होगा। बताते चलें कि अभी कुछ दिन पहले बाघराय के बगल गाँव मे दो मासूमों की मौत गहरे गड्ढे मे डूबने से हो गयी थी। लेकिन इस घटना के बाद भी राजस्व विभाग कोई सबक नही ले पाया है। देवरपट्टी के प्रधान और राजस्व कर्मियों की लापरवाही का परिणाम आने वाले कल मे यहाँ के लोगों को भोगना पड़ सकता है।

मारपीट व धमकी को लेकर लगाया आरोप, जांच में जुटी पुलिस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। आम की बाग की रखवाली कर रहे पीड़ित के साथ आरोपियों द्वारा मारपीट व गालीगलौज तथा जानलेवा धमकी को लेकर पुलिस को तहरीर दी गई है। लालगंज कोतवाली के समापुर जूड़ापुर निवासी श्रीराम मिश्र के पुत्र रविशंकर मिश्र ने पुलिस को दी गई तहरीर में आरोप लगाया है कि रविवार को दिन में डेढ़ बजे वह बाग में आम की रखवाली कर रहा था। इस बीच समापुर के चार आरोपी लाठी डण्डा व तमंचा लेकर बाग पहुंच गये। तहरीर में कहा गया है कि आरोपियो ने उसे गाली देते हुए मारापीटा। शोर मचाने पर लोगों को जुटता देख आरोपी तमंचा लहराते जानलेवा धमकी देते चले गये। सूचना पर डायल पुलिस मौके पर पहुंची। प्रभारी निरीक्षक अवन दीक्षित का कहना है कि तहरीर मिली है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

बालिका को जबरन मोटरसाइकिल से अगवा करने की कोशिश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कोतवाली देहात के कटरा मेदनीगंज में शुक्रवार की देर रात मोटरसाइकिल सवार दबंगों ने एक बालिका को जबरन मोटरसाइकिल पर बैठाकर अगवा करने की कोशिश की। विरोध करने पर उसके कपड़े फाडे गये। इस घटना के विरोध में लोगों ने पुलिस चैकी का घेराव किया। आधी रात को पीड़िता की मां की तहरीर पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की जिसमें सभासद के भाई सहित दो लोगों को नामजद किया गया। पुलिस उनकी तलाश कर रही है।

बिजली का कनेक्शन काटने गए लाइनमैनो को हमला

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली के टक्करगंज मोहल्ले में बिजली का कनेक्शन काटने गये लाइन मैनों पर दबंगों ने हमला बोल दिया। इस दौरान लाठी डंडे से आधा दर्जन लोगों ने लाइन मैनों को पीटा और गाली गलौज की। बता दें कि बिजली बकायेदारों के कनेक्शन काटकर वसूली करने टीम गई थी। सूचना पर पहुंचे जेई ओपी गुप्ता से भी दबंगों ने अभद्रता की। पूरे मामले की मारपीट की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। इस दौरान जेई ने नगर कोतवाली में तहरीर दी। शिकायत मिलने पर पुलिस जांच-पड़ताल में जुट गई है।

जिला स्वास्थ्य समिति की डीएम ने की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी जिलाधिकारी राजेश कुमार राय द्वारा सीएमओ सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ जिला स्वास्थ्य समिति की समीक्षा बैठक की गई। जिलाधिकारी ने प्रभारी चिकित्साधिकारियों से कहा कि जिला अस्पताल, सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में आने वाले मरीजों/मरीजो के परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाय तथा मरीजों को बेहतर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करायी जाय। सभी चिकित्सक समय से अस्पताल पहुँचकर मरीजो का उपचार करें। उन्होंने परिवार कल्याण कार्यक्रमों की समीक्षा के दौरान प्रभारी चिकित्साधिकारियों से कहा कि लक्ष्य को मासिक लक्ष्य में निर्धारित कर प्रगति सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने जननी सुरक्षा योजना की समीक्षा के दौरान संस्थागत प्रसव में प्रगति लाने के निर्देश देते हुए कहा कि निजी चिकित्सालयों से 15-15 दिन के अन्तराल पर उनके अस्पताल में हुए प्रसव की रिपोर्ट प्राप्त किया जाय। बैठक में जिला मातृ स्वास्थ्य परामर्शदाता आकाश दीप ने बताया गया

डीएम ने कहा कि अस्पताल आने वाले मरीजों/परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार करते हुए मरीजों को बेहतर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करायी जाए

कि लक्ष्य के सापेक्ष 96 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को एएनसी के लिए पंजीकृत किया गया है। आशा घर-घर भ्रमण कर गर्भवती महिलाओं को एएनसी के लिए चिह्नित करने का कार्य करती हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि ठीक प्रकार से कार्य न करने वाली आशाओं को चिन्हित कर उनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही किया जाय। बैठक में बताया गया कि जननी सुरक्षा योजना के तहत अब तक 88 प्रतिशत लाभार्थियों का भुगतान किया जा चुका है, जिस पर जिलाधिकारी ने शेष लाभार्थियों का भी भुगतान शीघ्र कराने के निर्देश दिये। बैठक में बताया गया कि जननी सुरक्षा योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2023-24 में 84 प्रतिशत लाभार्थियों का भुगतान किया जा चुका है, जिस पर जिलाधिकारी ने कहा कि एक सप्ताह के अन्दर शेष लाभार्थियों को भुगतान सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने आशाओं के भुगतान में भी प्रगति लाने के निर्देश दिये। बैठक में मातृ मृत्यु सूचना एवं ऑडिट की समीक्षा के दौरान बताया गया कि अब तक 06 मामले प्राप्त हुए है, जिस पर जिलाधिकारी ने सभी की ऑडिट रिपोर्ट उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने नियमित टीकाकरण की विस्तृत समीक्षा के दौरान अपेक्षित प्रगति न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को कार्ययोजना बनाकर प्रगति लाने के निर्देश दियें।बैठक में बताया गया कि आयुष्मान भारत योजना के तहत माह-मई 2024 तक 691084 लक्ष्य के सापेक्ष अब तक कुल 523291 गोल्डेन कार्ड बनाये जा चुकें हैं, शेष लाभार्थियों के गोल्डेन कार्ड आगामी 15 दिन के अन्दर बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बैठक में उप मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 हिन्द प्रकाश मणि ने बताया कि पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत जनपद में 42 अल्ट्रासाउण्ड सेन्टर पंजीकृत हैं तथा अल्ट्रासाउण्ड सेन्टरों की नियमित निरीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही की जाती है। बैठक में जिला मातृ स्वास्थ्य परामर्शदाता श्री आकाश दीप ने बताया गया कि प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जिला चिकित्सालय तथा सामुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रत्येक माह की 01, 09, 16 एवं 24 तारीख को हाईरिस्क चिह्नित गर्भवती महिलाओं को घर से अस्पताल तक लाने की परिवहन सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। आवश्यक जॉचे, हीमोग्लोबिन अति न्यून होने पर खून चढ़ाने की सुविधा, उपचार के बाद घर तक जाने के लिए परिवहन की सुविधा एवं अति जोखिम ग्रस्त महिलाओं के लिए एनएनएम व आशा द्वारा विशेष फॉलो-अप किया जाता है। उन्होंने बताया कि माह मई में कुल 1908 गर्भवती महिलाओं की जॉच की गई, जिसमें 216 अति जोखिमग्रस्त गर्भवती महिलाओं का भी उपचार किया गया। बैठक में बताया गया कि जनपद के सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रातः 09 बजे से अपरान्ह 04 बजे तक ई-संजीवनी (टेली कन्सल्टेशन) के माध्यम से मरीजां को विशेषज्ञ चिकित्सकों के द्वारा उपचार की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है जिलाधिकारी ने राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम, राष्ट्रीय अन्धता निवारण कार्यक्रम, पुनरीक्षित क्षय रोग नियन्त्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय कुष्ठ रोग कार्यक्रम आदि की भी विस्तृत समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दियें। इस अवसर पर सीएमओ डॉ. सुषेन्द्र कुमार एवं सीएमएस सुनील कुमार शुक्ला सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

डीएम को झूठी सूचना देकर वाहवाही लूट लेंगे चिकित्सक

कौशांबी जिले की चौपट स्वास्थ्य व्यवस्था को स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी सुधार नहीं कर पा रहे हैं जिला स्वास्थ्य समिति की मीटिंग में स्वास्थ्य अधिकारियों डॉक्टरों ने जिला अधिकारियों को आंकड़े का खेल बताते हुए वाहवाही लूट लिया है जबकि हकीकत यह है कि ग्रामीण क्षेत्र के 80 प्रतिशत से अधिक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बंद होने जैसी स्थिति में है महीनों बीत जाने के बाद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सक नहीं पहुंचते हैं जिन चिकित्सकों पर दंडात्मक कार्रवाई होनी चाहिए वह जिला अधिकारी को फिर गुमराह करके वाहवाही लूट कर चले गए हैं आखिर जिले की चौपट स्वास्थ्य व्यवस्था पर लापरवाह चिकित्सको और स्वास्थ्य अधिकारियों पर कब कठोर कार्रवाई होगी और मरीजों को समुचित इलाज कब मिलेगा बड़ा सवाल खड़ा हो गया है

न्यूज झरोखा

थाने पहुंचे एएसपी ने सुनी फरियाद

कोखराज कौशांबी समाधान दिवस कोखराज में एएसपी अशोक कुमार वर्मा व सीओ सिराथू अवधेश विश्वकर्मा की उपस्थिति में आम जनमानस के फरियाद को सुना गया और मामले का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने का निर्देश अधीनस्थों को दिया गया राजस्व से जुड़ी कई विवादित मामलों को गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण कराने का एएसपी ने सम्बंधित लेखपालों को आदेशित किया समाधान दिवस के मौके पर ग्यारह मामले आये जिसमें 2 मामले का मौके पर ही निस्तारण किया गया। मौके पर एसओ कोखराज इन्द्र देव ,राजस्व विभाग से कानून गो सुरेंद्र सिंह, सोहन लाल गुप्ता,लेखपाल लोकनाथ पांडेय,नरेंद्र सिंह, मान सिंह, दिलीप कुमार देवेंद्र कुमार सिंह,सुनील द्विवेदी, अमन सिंह,पवन सिंह,सुमित कुमार केशरवानी,पूनम मौर्या, अनुराधा वर्मा,आदि लोग उपस्थिति रहे

बसेड़ी गांव में तेजी से हो रहा है अवैध लकड़ी कटान

महगाव कौशाम्बी संदीपन घाट थाना क्षेत्र के हररायपुर पुलिस चौंकी अन्तर्गत बसेड़ी गांव में अवैध लकड़ी कटान तेजी से हो रहा है लकड़ी माफियाओं द्वारा कई मजदूरों को साथ लेकर सुबह से पेट्रोलियम आरा मशीन से हरे फलदार पेड़ की कटान की जाती है इलाके के आधा दर्जन लकड़ी माफिया का ताण्डव जारी है शुक्रवार को फिर क्षेत्र में हरा फलदार विशालकाय महुआ का पेड़ काट कर गिरा दिया। और देखते-देखते लकड़ी माफिया पेड़ की लकड़ी को उठा ले गए हैं पुलिस और वन विभाग के अधिकारी तमाशा देखते रह गए हरियाली और प्रकृति के दुश्मनों पर पुलिस भी मेंहरबान वन विभाग कदरदान हैं

दूध खोया पनीर आइस क्रीम ड्राई फ्रूट के नमूने किए संगृहीत

कौशाम्बी भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के निर्देश तथा आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवम औषधि प्रशासन ,लखनऊ के आदेश के क्रम में खाद्य सुरक्षा औषधि प्रशासन विभाग कौशाम्बी द्वारा जनपद में सर्वे हेतु नमूना संग्रहण का कार्य किया जा रहा है। उक्त अभियान में दूध, खोया, पनीर, आइस क्रीम, ड्राई फ्रूट इत्यादि खाद्य पदार्थो के नमूने संगृहीत किये जा रहे हैं। इस अभियान के अंतर्गत 22 जून को सिराथू बाजार में सहायक आयुक्त खाद्य शशि शेखर के नेतृत्व में खाद्य सचल दल के साथ नमूना संगृहीत किया गया। खाद्य सचल दल में खाद्य सुरक्षा अधिकारी शहाब उद्दीन सिद्दीकी व अनिल शामिल रहे। कार्यवाही का जनता द्वारा स्वागत किया गया था और व्यापारियों द्वारा भी सहयोग किया गया।

भरवारी के गेस्ट हाउस में सचिन पॉप डांस क्लास के सितारों ने मचाया धमाल

कौशाम्बी पॉप डांस के सितारों ने शुक्रवार को भरवारी कस्बे में जमकर धमाल मचाया है इस मौके पर उपस्थित लोगों ने जोरदार तालियों की तड़तड़ाहट से डांस ग्रुप का स्वागत किया है और उनके कार्यों की सराहना की है भरवारी में स्थित सचिन पॉप डांस क्लास स्टूडियो कई सालो से चल रहा है जिसको सचिन कुमार प्रेजेंट करते हैं अपने जिले में डांस सिखाने व कोरियोग्राफर के तौर पर यह जाने जाते हैं शुक्रवार 21 जून को सचिन पॉप डांस क्लास स्टूडियो की तरफ से एक डांस सेमिनार प्रोग्राम भरवारी स्थित लखन लाल गेस्ट हाउस में आयोजित किया गया जहां सचिन पॉप डांस क्लास के सितारों ने जमकर धमाल.मचाया जिसमे टी.वी शो डांस इंडिया डांस के कई सितारे शामिल हुये और जिले के जाने माने लोग भी कार्यक्रम में शामिल हुए लोगो द्वारा बताया गया कि सचिन जी अभी सिर्फ 21 साल के हैं लेकिन इनका डांस क्लास बहुत अच्छा है और प्रतिभा के तौर पर ये हमारे जिले का नाम रोशन कर रहे है

रेलवे ट्रैक पर मिले अज्ञात शव की हुई शिनाख्त

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के ग्राम सभा धुमाई के मजरा बड़ी बाग के सामने दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग शुक्रवार सुबह करीब 6 बजे मिले छिन्न भिन्न शव की शिनाख्त हो गई है शनि चौधरी सोसल मीडिया में प्रचारित खबर और फोटो देखकर अपने पिता सोहन लाल उम्र 48 वर्ष पुत्र स्व. रामदुलारे निवासी ग्राम सभा बिछियांवा जिला फतेहपुर के रूप में की है शनि चौधरी ने बताया उसके पिता बृहस्पतिवार की रात को अज्ञात कारण से घर से चले गए थे।शव की शिनाख्त होते ही अझुवा चौकी पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया जिसका आज शनिवार शाम परिजनों ने नम आंखों से अंतिम संस्कार कर दिया है।

घर से निकले युवक को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

कौशाम्बी। कोखराज थाना अंतर्गत सहजादपुर गांव के रहने वाले जुल्फीकार अली उम्र 26 वर्ष पुत्र फरजान अली किसी काम से घर से टेढ़ीमोड़ आया हुआ था । वापस जाते समय नंदमई गाँव के पास किसी अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक मे जोरदार टक्कर मार दी जिससे वह सड़क पर ही गिर गया। इस दुर्घटना की आवाज सुन आस पास के लोग मौके पर दौड़े और घायल जुल्फीकार अली को 108 एम्बुलेंस द्वारा सी एच सी कड़ा भिजवाया जहाँ से चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

टीन शेड ठीक कर रही बालिका छत से गिरी

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली के सिराथू ब्लॉक के मलाकसद्दी गांव के रहने वाले शिव चंद्र की पुत्री क्षमा उम्र 20 वर्ष अपने घर का टीन शेड ठीक कर रही थी कि अचानक उसका पैर फिसल गया जिससे वह छत से नीचे आ गिरी। आनन फानन मे घर वालों ने 108 एम्बुलेंस बुलाकर घायल बालिका को इलाज के लिए जिला अस्पताल मंझनपुर मे भर्ती करवाया जहाँ उसका इलाज चल रहा है।

लव मैरिज की शादी में विवाद ही विवाद

कौशांबी चरवा थाना क्षेत्र के मिरकुण्डी माजरा सैयद सरावा में लव मैरिज में शादी करने वाले दंपति के जीवन में विवाद ही विवाद है आए दिन पति पत्नी के बीच विवाद होता है एक दूसरे के आचरण को लेकर खींच तान रहता है जिससे आए दिन पति अपनी पत्नी की पिटाई कर देता है पत्नी ने मामले की सूचना थाना पुलिस को दिया है पहले तो हुआ प्यार फिर प्यार में कुछ दिनों तक सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था लेकिन जब कुछ दिनों के बाद से पति अपनी पत्नी को प्रताड़ना करना शुरू कर दिया है महिला के दो बच्चे छोटे छोटे हैं मिरकुण्डी मजरा सैय्यद सरावा की धर्म बदलकर सविता बनी युवती ने मानसिंह सरोज से लव मैरिज शादी किया है

कौशांबी के दो युवको की पटना में कार दुर्घटना में मौत

दोनों परिवार में मचा कोहराम शव लेने परिवार के लोग पटना रवाना

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी सैनी कोतवाली क्षेत्र के दो व्यक्ति कार से बिहार प्रांत के पटना गए थे जहां वह सड़क हादसे के शिकार हो गए हैं और दो लोगों की कार हादसे में दर्दनाक मौत हो गई है मौत की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है और परिवार के लोग पटना के लिए रवाना हो गए हैं जानकारी के मुताबिक पटना जिले के नौबतपुर में शनिवार को सड़क हादसे में कार सवार दो लोगों की मौत हो गई। बिहटा सरमेरा पथ पर कर्णपुरा पेट्रोल पंप के समीप तेज गति से जा रही कार ने पीछे से ट्रक में टक्कर मार दी।कार नंबर UP 70 CN 0424 में सवार दोनों लोगों की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई आसपास के लोगों ने मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दिया है दोनो मृतक सैनी कोतवाली के मीठेपुर सयांरा निवासी थे विकास पटेल 18 वर्ष पुत्र मानसिंह निवासी चतुरी पुर मजरे मीठे पुर सयारा और दूसरे दर्जिन का पुरवा अशोक कुमार 25 वर्ष पुत्र दशरथ लाल के रूप में हुई है ,मृतकों के परिजन आज सुबह पटना के लिए रवाना हो गए हैं।

एक ही गांव में 15 वर्षों से तैनात सफाई कर्मी कर रहा मनमानी

कौशांबी। सिराथू ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत मधवामई गांव में नालिया टूट गई है और सड़क पर नालियों का गंदा पानी बहता रहता है। सफाई कर्मचारी से जब ग्रामीण लोग सफाई के लिए कहते हैं तो सफाई कर्मी ग्रामीणों से अकड़ दिखाता है और कहता है कि जो कुछ करना है कर लीजिए हम सफाई अपनी मर्जी से ही करेंगे जहां हमारी इच्छा होगी वहीं सफाई करेंगे आपके कहने से नहीं करेंगे आप हमें वेतन नहीं देते हैं जो आपके कहने पर हम सफाई करें। ग्रामीणों से सफाई कर्मी यह भी बोलता है कि एक ही गांव में 15 वर्षों से तैनात हूं मुझे कोई ट्रांसफर करने वाला सिराथू ब्लॉक में नही है। किसी भी अधिकारी की हिम्मत नही है जो मुझे मधवामई गांव से ट्रांसफर करके दूसरे गांव में भेज दे।

थाना महेवाघाट एवं पश्चिम शरीरा में डीएम एसपी ने सुनी जनशिकायतें

अखंड भारत संदेश

राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर निस्तारित करने के दिये निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी राजेश कुमार राय एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना महेवाघाट एवं थाना पश्चिम शरीरा में जनशिकायतों को सुनकर एवं सम्बन्धित अधिकारियों को तत्काल मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दिये। थाना महेवाघाट में कुल 07 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 01 शिकायत का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया, शेष शिकायतों के निस्तारण के लिए डीएम एवं पुलिस अधीक्षक ने राजस्व एंव पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर निस्तारित करने के निर्देश दिये। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा में कुल 06 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 04 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया, शेष शिकायतों के निस्तारण के लिए जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने राजस्व एंव पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर निस्तारित करने के निर्देश दिये।

कैच द रेन-2024 के सफल क्रियान्वयन के लिए सीडीओ ने दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी की अध्यक्षता में जल शक्ति अभियानः ह्लकैच द रेन-2024ह्व के सफल क्रियान्वयन के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में सहायक अभियंता, लघु सिंचाई संजय कुमार जायसवाल ने अवगत कराया कि शासन द्वारा जल संरक्षण एवं पुनर्भरण के लिए भारत सरकार, राज्य सरकार एवं सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा वर्ष 2019 में जल शक्ति अभियान का प्रारंभ किया गया था। दिनांक 09.03.2024 को मा0 जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार ने जल शक्ति अभियान ह्लकैच द रेन 2024 नारी शक्ति से जल शक्ति थीम के साथ प्रदेश के सभी जनपदों में पंचम चरण का उद्घाटन किया एवं क्रियान्वयन के लिए सभी लोगों की सक्रिय सहभागिता के लिए आह्वान किया हैं। जल शक्ति अभियान ह्लकैच द रेनह्व 2024 के अन्तर्गत मुख्य रूप से जल संरक्षण एवं वर्षा संचयन, पारम्परिक जल निकायों/जल स्त्रोतों का नवीनीकरण, बोरवेल पुनर्भरण, वाटरशेड का विकास, गहन वनारोपण, छोटी नदियों का कायाकल्प एवं नारी शक्ति से जल शक्ति के थीम पर जन-सहभागिता के माध्यम से जन-जागरूकता कार्यक्रम आदि गतिविधियॉ सम्पादित करायी जानी हैं। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने सभी सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों को अपने से सम्बन्धित कार्यक्रमों को सम्पादित कराने के निर्देश देते हुए कहा कि समस्त कराये गये कार्यों को पोर्टल पर शीघ्र अपलोड कराये जाने की कार्यवाही किया जाय।

जिला संयोजक जिला प्रमुख जिला संगठन मंत्री नगर विस्तारक के दायित्व की घोषणा

भरवारी कौशाम्बी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद काशी प्रांत अभ्यास वर्ग चंदौली मां खंडवारी महिला महाविद्यालय में परिषद की बैठक हुई और बैठक में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यों पर चर्चा हुई विद्यार्थियों का हित कैसे किया जाए इस पर लोगों ने अपने-अपने सुझाव रखें बैठक के बाद कौशांबी के पदाधिकारी की घोषणा की गई है कौशाम्बी जिले के जिला संयोजक का दायित्व शिवबाबू चौधरी को सौंपा गया जिला प्रमुख की जिम्मेदारी भवंस मेहता स्नातकोत्तर महाविद्यालय भरवारी के प्राचार्य डॉ.प्रबोध श्रीवास्तव को सौंपी गयी वा जिला संगठन मंत्री की जिम्मेदारी अश्वनी सिंह को दी गयी है नगर विस्तारक कमल बनाए गए हैं सर्वसम्मत से उनके नाम को स्वीकृत प्रदान की गई है कौशांबी जनपद के पदाधिकारी के घोषणा होने के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्यों ने उन्हें बधाई दी है और कहा है कि नए पदाधिकारी के कार्यभार ग्रहण करने के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मजबूत होगा उक्त जानकारी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद काशी प्रांत कौशांबी के राष्ट्रीय कला मंच की जिला संयोजक रिचा पांडेय ने दी है

हिष्ट्रीशीटर का बेटा बना चौकीदार क्षेत्र में कर रहा अवैध वसूली

कौशांबी। हिष्ट्री शीटर का बेटा चौकीदार बनने के बाद क्षेत्र में आतंक अत्याचार शुरू कर दिया है। उक्त चौकीदार के आतंक के आगे क्षेत्र के लोग कुछ बोलने को तैयार नहीं हैं। चरवा थाना क्षेत्र के बरियावां चौकी अंतर्गत रामपुर गांव निवासी बच्ची लाल पुत्र स्व० केदारनाथ चौकीदार के पद पर कार्यरत है। इसी गांव में मानक को दरकिनार करते हुए दो लोंगों की और तैनाती कर दी गयी है, जिनका नाम सुकुल पुत्र स्व० छेदी लाल और सुधीर कुमार पुत्र हीरा लाल है। जबकि गांव की कुल आबादी लगभग 1200 है। जिसमें सुधीर कुमार के पिता हीरा लाल पुत्र स्व० नत्थू लाल पासी एक शातिर हिस्ट्रीशीटर था और अब बेटा चौकीदार हो गया है। बेटा चौकीदार बनते ही हीरालाल खुलेआम गुंडई करने लगा है और गांव में बाजार लगती है जिसमें सुधीर कुमार (चौकीदार) और हीरालाल गुंडाटैक्स वसूलते हैं जिनके कारनामें पर ग्रामीण उनके खिलाफ डर वश कुछ बोलने को तैयार नही हैं। पिता - पुत्र की गुंडई से गांव में डर और दहशत से का माहौल व्याप्त है। गौर करने वाली बात यह है कि एक ही गांव में तीन - तीन चौकीदारों की नियुक्ति कैसे हो गयी जिसमें एक हिस्ट्रीशीटर का बेटा भी है। लोगों की माने तो पुलिस उक्त चौकीदार को कमाई का एक जरिया बना लिया है क्योंकि जिस चौकीदार का पिता एक हिस्ट्रीशीटर रहा हो और उसका पुत्र एक चौकीदार हो उस गांव में दलाली के अलावा और कुछ नहीं हो सकता है। उक्त चौकीदार के विरुद्ध गांव का कोई भी व्यक्ति खुल कर कुछ बोलने को तैयार नहीं है क्योंकि हीरालाल एक हिस्ट्रीशीटर था और अब वही गुंडई के बल पर गांव के बाजार में वसूली व दलाली शुरू कर दिए हैं। बाजार में आने वाले सभी व्यापारी इनकी वसूली से पीड़ित हैं।

परिवार परामर्श केंद्र ने दो दंपति के बीच कराया समझौता

कौशाम्बी परिवार परामर्श केंद्र में प्रभारी उप निरीक्षक श्याम नारायण यादव व महिला कांस्टेबल कमला यादव के माध्यम से काउंसलिंग के दौरान 02 फाइलों में दोनों पति-पत्नी व उनके परिजनों की सहमति से सुलह समझौता किया गया दोनों पक्षों की परिवार परामर्श केंद्र द्वारा पति-पत्नी को उनके जीवन की पारिवारिक कर्तव्य को बताते हुए समझाया गया दोनों पति-पत्नी द्वारा बताया गया कि अब हम दोनों के बीच किसी प्रकार का कोई मनमुटाव नहीं रह गया है। अब हम दोनों अपनी खुद की सहमति से सुलह समझौता करना चाहते हैं दोनों पक्षों द्वारा व्यक्त किया गया, कि अब हम दोनों एक दूसरे के साथ प्रेम पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे । परिवार परामर्श केंद्र द्वारा दोनों को सलाह दिया गया, कि अपने जीवन को पुनः शुभारंभ करिए ।दोनों पति-पत्नी अपने जीवन की नई शुरूआत करिए । परिवार परामर्श केंद्र द्वारा विपक्षी को हिदायत दिया गया कि आवेदिका पत्नी के साथ बीती हुई बातों को लेकर विवाद नहीं करेंगे वह दोनों लोग अपने बड़ों का सम्मान करते हुए अपना जीवन यापन करेंगे

लात घूसों डंडे से चाचा को भतीजे ने पीटा

कौशांबी चरवा थाना क्षेत्र के डिहवा मजरा पंसौर में शनिवार को एक भतीजे ने अपने चाचा को लात घूसा डंडा से बेरहमी से पीट दिया जिससे चाचा को चोट आई है मामले की सूचना पुलिस को दी गई है पुलिस को दिए शिकायती प्रार्थना पत्र के मुताबिक संजय और उसके भाई बनारसी पुत्र मातादीन के संयुक्त जमीन का मुकदमा न्यायालय में चल रहा था मुकदमे की पैरवी और खर्च की जिम्मेदारी संजय को दी गई थी दोनों भाई जमीन का मुकदमा न्यायालय से जीत गए हैं और आधी आधी जमीन पर काबिज हो गए हैं न्यायालय में मुकदमे की पैरवी के दौरान आने वाले 15 हजार रुपए खर्च की डिमांड संजय ने अपने भाई बनारसी और उसके पुत्र विकास से किया मुकदमे की पैरवी में होने वाले खर्च की आधी रकम मांगने पर विकास ने अपने चाचा संजय को लात घूसा डंडे से बेरहमी से पीट दिया है जिससे संजय को चोट आई है उसे इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया मामले की सूचना पुलिस को दी गई है

एसडीएम पर भारी पड़ा तालाब कब्जा करने वाला माफिया

अखंड भारत संदेश

सरकारी तालाब कब्जा रोकने में विफल लेखपाल और अधिशासी अधिकारी की गिरफ्तारी में नरमी क्यों

एसडीएम ने तालाब कब्जे को रोका फिर 4 महीने बाद उसी तालाब में दोबारा शुरू हो गया जबरिया कब्जा

कौशांबी अधिकारियों के आदेशों की धज्जियां उड़ाने में राजस्व लेखपाल को महारत हासिल हो गई है जिससे सरकारी संपत्ति सुरक्षित नहीं रह गई है और अधिकारी भी गांव-गांव के सरकारी संपत्तियों की सुरक्षा को लेकर गंभीर नहीं दिखाई पड़ रहे हैं जिसका फायदा उठा करके लेखपाल मोटी रकम की वसूली कर रहे हैं ताजा मामला मंझनपुर तहसील क्षेत्र के पश्चिम शरीरा नगर पंचायत के रामाधीन के पूरा के तालाबी आराजी संख्या 371 और 372 का है तालाब की आराजी पर गांव के कैरा पुत्र राम विशाल 20 फरवरी 2024 से कब्जा कर रहे थे पिलर खड़ा कर भवन बनाने जा रहे थे मामले की शिकायत 23 फरवरी 2024 को एसडीएम और अन्य अधिकारियों से हुई जिस पर अधिकारियों के निर्देश पर तालाब की जमीन का निर्माण लेखपाल ने रोक दिया चार महीने तक जितना निर्माण हो चुका था उसे हटाया नहीं किया और 4 महीने बाद फिर 22 जून 2024 को इसी तालाब पर फिर उसी ब्यक्ति ने निर्माण शुरू कर दिया है लेखपाल सब देख रहे हैं थाना दिवस आयोजित हो रहा है अधिकारियों से शिकायत हो रही है लेकिन उसके बाद तालाब की जमीन पर कब्जे को नहीं रोका गया है जिससे राजस्व निरीक्षकों के साठगांठ से इनकार नहीं किया जा सकता है नगर पंचायत पश्चिम शरीरा के अधिशासी अधिकारी ने भी सरकारी तालाब की जमीन पर हो रहे कब्जे को रोकने के लिए पहल नहीं किया है आखिर नगर पंचायत के अधिकारियों के सरकारी संपत्ति सुरक्षा में क्या जिम्मेदारी है नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी के रहते पश्चिम शरीरा क्षेत्र की सरकारी संपत्ति सुरक्षित नहीं रह गई है जबकि उच्च न्यायालय ने हिंच लाल तिवारी व अन्य के मुकदमे की सुनवाई के दौरान आदेशित किया है कि तालाब के कब्जे हटाए जाएं लेकिन तालाब के कब्जे हटाने की बात तो दूर तालाब पर कब्जे कराए जा रहे हैं अधिशासी अधिकारी की यह लापरवाही सवालों के घेरे में है सरकारी संपत्ति सुरक्षित ना रख पाने वाले अधिशासी अधिकारी पर अभी तक मुकदमा दर्ज करा कर उनकी गिरफ्तारी अफसरो ने नहीं कराई है बताया जाता है कि तालाब की जमीन पर कब्जा करने वाले से तहसील के अधिकारियों को पक्ष में लेने के लिए 50000 से अधिक की वसूली लेखपाल ने कर लिया और अब तालाब की जमीन के कब्जे को रोकने के लिए लेखपाल तैयार नहीं है जिससे सरकारी जमीन सुरक्षित नहीं दिखाई पड़ रही है सवाल उठता है कि सरकारी जमीन कब्जा करवा कर रकम की वसूली करने वाले लेखपालों के विरुद्ध भ्रष्टाचार का मुकदमा दर्ज कराकर अधिकारियों द्वारा इनकी गिरफ्तारी क्यो नहीं कराई जाती सरकारी जमीन पर कब्जा कराने वाले लेखपालों की गिरफ्तारी में आखिर इतनी लापरवाही क्यों बढ़ती जा रही है क्या तहसील के आला अधिकारी भी सरकारी जमीन कब्जा कराने वाले लेखपाल के वसूली में हिस्सेदार हैं लगातार अधिकारियों की लापरवाही के चलते सरकारी संपत्तियों पर खतरा बढ़ रहा है और आधे से अधिक सरकारी जमीनों पर कब्जा हो चुका है

संपादक की कलम से

भीषण गर्मी से खुला काम करने वाले मजदूरों को सबसे ज्यादा नुकसान क्यों

भारत में हाल ही में आई भीषण गर्मी ने कई क्षेत्रों में तापमान को 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंचा दिया है , जिससे डेली वर्कर्स, खासकर डिलीवरी कर्मियों और दिहाड़ीदार मजदूरों के सामने आने वाली चुनौतियों में इजाफा हुआ है। इस प्रकार के खुला काम करने वाले इस दौरान श्रमिक पर्याप्त स्वास्थ्य-सुरक्षा उपायों और न्यूनतम ब्रेक के बिना चरम मौसम की स्थिति के लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण गर्मी से थकावट और निर्जलीकरण से पीड़ित हुए हैं, जिससे पता नहीं कितनों की जान असमय गई है। दिहाड़ीदार मजदूर स्थायी नौकरियों के बजाय अल्पकालिक अनुबंध या फ्रीलांस काम करते है। इस में उबर, स्विगी और जोमैटो जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए अस्थायी, लचीले और प्रोजेक्ट-आधारित काम करने वाले भी शामिल हैं । ये नौकरियाँ लचीलापन प्रदान करती हैं , लेकिन इन लोगों को पारंपरिक रोजगार से जुड़े लाभों और सुरक्षाओं का अभाव होता है। अगर वे काम नहीं करेंगे, तो उनके घर खाना नहीं पकेगा। यह उनके जीवन-यापन का एकमात्र साधन है। ऐसे लोग अक्सर काफी गरीबी में जीने के लिए विवश होते हैं। साफ पानी जैसी आधारभूत सुविधाओं से वंचित झुग्गियों के घर टिन या तारपोलिन की छतों के नीचे तपती गर्मी झेलते हैं। चूंकि ये काम ज्यादातर खुले वातावरण में ही करने पड़ते हैं, तो भीषण गर्मी में इन लोगों के बीमार पड़ने का खतरा भी ज्यादा रहता है। ऐसे श्रमिकों को अक्सर स्वास्थ्य बीमा, सेवानिवृत्ति लाभ या सवेतन अवकाश की सुविधा नहीं मिलती, जिससे बीमारी या चोट के समय वे आर्थिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। श्रमिकों की आय अत्यधिक परिवर्तनशील और अप्रत्याशित होती है, जिससे वित्तीय योजना बनाना मुश्किल हो जाता है। श्रमिकों को कठोर कार्य स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें चरम मौसम का सामना करना भी शामिल है इनको आमतौर पर स्वतंत्र ठेकेदारों के रूप में वगीर्कृत किया जाता है, जिससे उन्हें कई श्रम सुरक्षा से वंचित रखा जाता है जो औपचारिक कर्मचारियों को प्राप्त होती हैं। ऐसे विपरीतसमय में श्रमिकों को संरक्षण और निष्पक्ष व्यवहार के लिए आवश्यक प्रबंध करने की जरूरत है। सामाजिक सुरक्षा और स्वास्थ्य लाभ के लिए वर्कर्स को स्वास्थ्य बीमा, मातृत्व लाभ और पेंशन सहित सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करनाबहुत जरूरी है। उदाहरण के लिएः राजस्थान प्लेटफॉर्म आधारित वर्कर्स (पंजीकरण और कल्याण) विधेयक, 2023 का उद्देश्य वर्कर्स को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है, जो अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय मिसाल कायम करेगा। वर्कर्स के लिए एक न्यूनतम वेतन नीति स्थापित करना ताकि एक स्थिर आय और न्यूनतम भुगतान किए गए घंटे या कमाई सुनिश्चित हो सके। जैसे सिंगापुर के प्रस्तावित विधायी परिवर्तनों में श्रमिकों के लिए कार्य-चोट बीमा और पेंशन कवरेज का विस्तार करना शामिल है, जिसका भारत भी अनुकरण कर सकता है। वर्कर्स को कर्मचारी के रूप में मान्यता देना या उन्हें समान अधिकार और सुरक्षा प्रदान करना समय की मांग है। इसमें संगठित होने और यूनियन बनाने का अधिकार शामिल है। उदाहरण के लिएः यूके और कैलिफोर्निया में कानूनी लड़ाइयों के कारण वर्कर्स को कर्मचारी के रूप में मान्यता मिली है, जो न्यूनतम वेतन और अन्य लाभों के हकदार हैं । सुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ सुनिश्चित करने के लिए जिसमें सुरक्षात्मक गियर, नियमित ब्रेक और चरम मौसम से श्रमिकों की सुरक्षा के उपाय शामिल हैं। उदाहरण के लिएः निष्पक्ष व्यवहार और शिकायत निवारण तंत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत में दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं , लेकिन इनको मजबूत करने की आवश्यकता है। स्वतंत्र श्रम न्यायालयों की स्थापना करना और यह सुनिश्चित करना कि उनमें मामलों को तुरंत और निष्पक्ष रूप से निपटाने की क्षमता हो। उदाहरण के लिएः कतर की श्रम विवाद समितियों ने न्याय तक पहुँच में सुधार किया है , लेकिन देरी और प्रवर्तन संबंधी मुद्दे बने हुए हैं, जिसके लिए और सुधार की आवश्यकता है। वर्कर्स की रोजगार क्षमता और आय क्षमता को बढ़ाने के लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरू करनाभी आवश्यक है। इसमें वित्तीय साक्षरता और डिजिटल कौशल का प्रशिक्षण शामिल हो। उदाहरण के लिएः स्किल इंडिया जैसी सरकारी पहलों का विस्तार करके वर्कर्स को विशेष रूप से लक्षित किया जा सकता है , ताकि उन्हें प्रासंगिक कौशल और प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके। कल्याणकारी योजनाओं के पंजीकरण और पहुँच को सरल बनाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सेवा वितरण में सुधार के लिए वर्कर डेटा को राष्ट्रीय श्रम डेटाबेस में एकीकृत करना श्रमिकों के लिए फायदेमंद स्कीम बनाने में सहायक होगा। उदाहरण के लिएः भारत का ई-श्रम पोर्टल, जिसका उद्देश्य असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डेटाबेस बनाना है, वर्कर्स को शामिल करने के लिए इसका लाभ उठाया जा सकता है , ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें समय पर लाभ मिले।

हवा में घुलते जहर की बेहद चिंताजनक तस्वीर

हवा में घुलते जहर यानी वायु प्रदूषण का खतरा ऐसा है जो दिखता भी है और महसूस भी होता है। लेकिन इस खतरे का मुकाबला करने के लिए जब काम करने की बारी आती है तो सब एक-दूसरे का मुंह ताकते नजर आते हैं। यूनिसेफ और हैल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट (अमरीका का एक स्वतंत्र गैर-लाभकारी शोध संस्थान) की रिपोर्ट ह्यस्टेट ऑफ ग्लोबल एयरह्ल की ताजा रिपोर्ट बढ़ते वायु प्रदूषण के इन्हीं खतरों की ओर आगाह करती है जिनको लेकर हम बेपरवाह नजर आते हैं।

इस रिपोर्ट में यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है कि अकेले वायु प्रदूषण के कारण दुनिया में हुई मौतों का एक चौथाई भारत से जुड़ा है। हैरत की बात यह है कि मौतों के ये आंकड़े वर्ष २०२१ के उस दौर के हैं जब कोरोना महामारी के चलते आम तौर पर सभी तरह का यातायात काफी समय तक बाधित रहा। दुनिया में वायु प्रदूषण के कारण ८४ लाख मौतें हुईं जिनमें से २१ लाख भारत में हुई हैं। साफ है कि बढ़ते प्रदूषण के बीच हम जिस हवा में सांस ले रहे हैं वह साल दर साल लाखों लोगों की जान की दुश्मन बन गई है।

कहना न होगा पर सच यह भी है कि दुनिया भर में युद्ध, आतंकवाद व गंभीर बीमारियों से मौतों का जितना खतरा है उससे कई गुना ज्यादा खतरा हवा में घुलते इस जहर का है। खास तौर से जब हम भारत में पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मौत के कारणों की पड़ताल करते हैं तो कुपोषण के बाद इसकी बड़ी वजह वायु प्रदूषण ही है। वर्ष २०२१ के दौरान भारत में १,६९,४०० बच्चों की मौत वायु प्रदूषण जनित कारणों से हुई, जबकि दुनिया भर में वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से पांच वर्ष से कम उम्र के 700,000 से अधिक बच्चों की मौत हुई। इसी अवधि के दौरान शहरों में वायु प्रदूषण के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार भले ही मोटर-वाहन हों पर एक तथ्य यह भी है कि इस प्रदूषण से बीमारियों का शिकार निचले तबके से जुड़े लोग ज्यादा होते हैं। ठीक वैसे ही जैसे पूरी दुनिया में सिर्फ 10 प्रतिशत लोग ग्लोबल वार्मिंग से जुड़ी ग्रीनहाउस गैसों के अधिकांश उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं लेकिन उसका नुकसान समूची दुनिया, खास तौर पर निर्धन वर्ग को उठाना पड़ता है।

वायु प्रदूषण को लेकर पिछले दिनों ही आई एक अन्य रिपोर्ट में चेताया गया था कि जहरीली हवा का यही हाल रहा तो भारतीयों की औसत उम्र छह साल कम होने का खतरा पैदा हो जाएगा। इस जहर का असर कम करने के लिए सख्त कानून-कायदे बनाकर सजा और जुमार्ने तक के प्रावधान भी खूब हुए हैं, लेकिन असली जरूरत जन-जागरूकता की है।

उप्र और महाराष्ट्र ने रोका भाजपा का रथ

– प्रो. रविकांत

बाबा साहब अम्बेडकर के प्रति भावुक और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र दलितों ने भाजपा को हराने में बड़ी भूमिका अदा की। अम्बेडकरवादी वैचारिक पृष्ठभूमि होने के कारण उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के दलितों ने एकजुट होकर भाजपा और आरएसएस के हिंदू राष्ट्र बनाने और संविधान बदलने के मंसूबों पर ताला लगा दिया और यह संकेत दे दिया है कि आने वाले वक्त में भी जब इस तरह की हिमाकत होगी तो दलित समाज अपने निजी हितों को छोड़कर हिंदुत्ववादियों को रोकने के लिए अपने मताधिकार का ही प्रयोग नहीं करेगा अगर जरूरत पड़ेगी तो सड़क पर संघर्ष करने के लिए भी तैयार रहेगा। 2024 की लोकसभा चुनाव में भाजपा को बहुमत से रोकने में दो राज्यों की सबसे बड़ी भूमिका रही। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र देश के सबसे बड़े राज्य हैं। दोनों ही राज्य हिंदुत्व की प्रयोगशाला माने जाते हैं। दोनों राज्यों में लंबे समय से भाजपा सत्ता में है। इन राज्यों में भाजपा का अनेक छोटे-बड़े सहयोगी दलों के साथ गठबंधन भी है। महाराष्ट्र में भाजपा एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी के साथ गठबंधन सरकार में है। जून 2022 में उद्धव ठाकरे की महा विकास अघाड़ी की सरकार को गिराकर भाजपा ने एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में सरकार बनाई। उद्धव ठाकरे से बगावत करके एकनाथ शिंदे ने शिवसेना पर कब्जा कर लिया। ठीक इसी तरह भतीजे अजित पवार ने दो तिहाई से ज्यादा विधायक तोड़कर चाचा शरद पवार की एनसीपी पर कब्जा कर लिया। जाहिर तौर पर यह तोड़फोड़ केंद्र की मोदी सरकार के इशारे पर हुई थी। महाराष्ट्र में महायुति सरकार बनाने के पीछे असली मकसद लोकसभा चुनाव था। लेकिन महाराष्ट्र की 48 सीटों में से केवल 17 पर महायुति गठबंधन जीत सका। इसमें 9 पर भाजपा, 7 पर शिवसेना और 1 पर एनसीपी ने जीत हासिल की। इसके बरक्स उद्धव ठाकरे की शिवसेना, शरद पवार की एनसीपी और कांग्रेस ने मिलकर 30 सीटों पर जीत हासिल की। आश्चर्यजनक रूप से कांग्रेस को सर्वाधिक 13, शिवसेना (यूबीटी) को 9 और एनसीपी (शरदचंद्र पवार) को 8 सीटें मिलीं। केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग के जरिए पार्टियों को तोड़कर और तमाम सामाजिक समीकरण साधकर भी महाराष्ट्र में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। 2014 में भाजपा की जीत में उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी भूमिका थी। यूपी की 80 सीटों में से 71 सीटें जीतकर भाजपा ने पूरे देश में 282 सीटें हासिल की थीं। इसके बाद 2019 के चुनाव में सपा बसपा गठबंधन के सामने भी भाजपा ने 62 सीटें जीतकर 303 सीटों का बड़ा बहुमत हासिल किया। 2024 के चुनाव में सपा कांग्रेस गठबंधन के सामने भाजपा केवल 33 सीटों पर सिमट गई। उत्तर प्रदेश में भाजपा की हार कई मायने में गौरतलब है। 90 के दशक में उत्तर प्रदेश भाजपा के हिंदुत्व का केंद्र बना। भाजपा के उभार में राम मंदिर आंदोलन की बड़ी भूमिका रही है। बाबरी मस्जिद तोड़कर (6 दिसम्बर, 1992) भाजपा और संघ ने जिस राम मंदिर के लिए आंदोलन शुरू किया था, वह इस साल बनकर तैयार हो गया। 22 जनवरी को हुए उद्घाटन के समय पूरे देश को भगवा झंडों से पाठ दिया गया। गोरखपुर मठ के महंत योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने उत्तर प्रदेश में बड़ी जीत हासिल की थी। योगी आदित्यनाथ की छवि उग्र हिंदुत्ववादी नेता की है। यूपी में कानून व्यवस्था के नाम पर योगी सरकार ने मुसलमानों के घरों पर बुलडोजर चलाया। गुंडे खत्म करने के नाम पर सैकड़ों छोटे-मोटे अपराधियों का एनकाउंटर कर दिया गया। इनमें भी ज्यादातर मुस्लिम थे। ईद, मुहर्रम और बकरीद पर मुसलमानों को सख्त हिदायतें दी जाती हैं, जबकि हिंदू त्योहारों पर नौजवान हिंदुओं को धर्म की अफीम चटाकर मस्जिदों के सामने डीजे बजाने और समुदाय विशेष को अपमानित करने का पूरा मौका मिलता है। इनमें अधिकतर पिछड़े और दलित नौजवानों का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन जब यही नौजवान नौकरी मांगते हैं या समुचित आरक्षण लागू करने की मांग करते हैं तो उन्हें लाठियां मिलती हैं। इस व्यवस्था को गोदी मीडिया की भाषा में राम राज्य कहा जाता है। उत्तर प्रदेश राम मंदिर आंदोलन की ही नहीं बल्कि मान्यवर कांशीराम की बहुजन आंदोलन की भी जमीन है। सांप्रदायिक उग्रता और सामाजिक विभाजन के बावजूद भाजपा कभी नितांत हिंदुत्व के बलबूते चुनाव नहीं जीत सकी। भाजपा ने दलित पिछड़ा कार्ड खेला। गैर जाटव दलित और गैर यादव पिछड़ों में जाटवों और यादवों के खिलाफ नफरत पैदा करके भाजपा मजबूत जनाधार बनाने में कामयाब हुई। इसके बावजूद उसने समय-समय पर अनेक छोटे दलों के साथ गठबंधन किया। इस चुनाव में भी मोदी और योगी को अपशब्द कहने वाले ओमप्रकाश राजभर से भाजपा ने गठबंधन किया। राम का अपमान करने वाले संजय निषाद को साथ लिया। कांशीराम के साथी रहे सोनेलाल पटेल की बेटी अनुप्रिया पटेल के अपना दल के साथ भी भाजपा ने गठबंधन किया। इतने प्रयोग और आक्रामक प्रचार के बावजूद भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। सामाजिक समीकरण, कट्टर हिंदुत्व और पानी की तरह पैसा बहाने के बावजूद भाजपा को उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में क्यों पराजय मिली? दरअसल, विपक्षी इंडिया गठबंधन ने चुनाव प्रचार में संविधान और लोकतंत्र बचाने का मुद्दा जोर-जोर से उठाया। कांग्रेस और खासकर राहुल गांधी ने सामाजिक न्याय, आरक्षण, समान प्रतिनिधित्व और सम्मान देने का वादा किया। नतीजे जाहिर करते हैं कि विपक्ष के इस एजेंडे का सबसे ज्यादा प्रभाव उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में हुआ। इन दो राज्यों ने भाजपा और मोदी के मंसूबों पर पानी फेर दिया। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र देश के सबसे बड़े सूबे हैं। करीब एक चौथाई सीटें इन राज्यों से आती हैं। उत्तर प्रदेश की 80 और महाराष्ट्र की 48 यानी कुल मिलाकर 128 सीटों में से भाजपा केवल 50 सीटें जीत सकी। इन प्रदेशों में भाजपा 40 फीसदी सीटें भी जीतने में कामयाब नहीं हुई। नरेंद्र मोदी को पूर्ण बहुमत से रोकने में उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की सबसे बड़ी भूमिका है। 18वीं लोकसभा का यह चुनाव क्यों बेहद खास रहा? आरएसएस की स्थापना के शताब्दी वर्ष में तीसरी बार जीत हासिल करने के लिए बेताब नरेंद्र मोदी ने पहले ही अपने इरादे जाहिर कर दिए थे। पिछले दो साल से बार-बार संविधान बदलने की बात की जा रही थी। बाबा साहब अंबेडकर के संविधान को हटाकर नया संविधान लागू करने के लिए देश में माहौल तैयार किया जा रहा था। विदित है कि अनुच्छेद 368 में संविधान संशोधन का प्रावधान है। लेकिन 1973 में केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य मामले में सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया था कि संविधान के मूलभूत ढांचे को नहीं बदला जा सकता। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश वर्तमान राज्यसभा सांसद रंजन गोगोई और उपराष्ट्रपति जगदीप धनगढ़ ने संसद में मूलभूत ढांचे की वैधता पर पुनर्विचार करने की बात उठाई। जाहिर तौर पर यह सब मोदी सरकार के इशारे पर हो रहा था। इसी दरमियान 15 अगस्त 2023 को प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष बिबेक देवराय ने बाबा साहब द्वारा लिखित संविधान को औपनिवेशिक विरासत का प्रतीक बताते हुए नया संविधान लिखने की वकालत की। यह सिलसिला चुनावी ऐलान के बाद और आगे बढ़ा। अनंत कुमार हेगड़े से लेकर ज्योति मिर्धा, लल्लू सिंह , अरुण गोविल और गिरिराज सिंह जैसे बड़बोले भाजपा नेताओं ने संविधान बदलने के लिए 400 सीटें जीतने का दावा किया। यह मुद्दा चुनाव में इतना भारी पड़ जाएगा खुद मोदी ने कभी नहीं सोचा होगा। गौरतलब है कि संविधान बदलने की बात कतई हवा में नहीं थी। आरएसएस के शताब्दी वर्ष में संघ के प्रचारक से प्रधानमंत्री बने नरेंद्र मोदी अपनी पितृ संस्था की हसरत को पूरा करने के इरादे से चुनाव मैदान में उतरे थे। लेकिन दो बड़े राज्यों ने उनके मनसूबों पर पानी ही नहीं फेर दिया बल्कि उनकी हैसियत भी बता दी।

चिपको की तरह दक्षिण भारत का अप्पिको

इस आंदोलन का असर हुआ कि कर्नाटक के पश्चिमी घाट में हरे पेड़ों को कटने पर सरकार ने रोक लगाई, जो अब भी जारी है। यह अहिंसक व गांधीवादी तरीके का आंदोलन था। पेड़ों से लोग चिपक गए थे। यह प्रतीकात्मक ही नहीं था, वास्तव में वनों का कटान रोकने के लिए वनों से लोग चिपक गए। बिलकुल उत्तराखंड के चिपको आंदोलन की तरह। चिपको आंदोलन की 50 वीं वर्षगांठ पूरी हो रही है। इस आंदोलन ने हिमालय में वन कटाई पर रोक लगवाने में सफलता पाई थी। इसका देश-दुनिया में काफी असर हुआ था। कई जगहों पर इससे प्रभावित होकर लोगों ने पेड़, पहाड़, पानी, पत्थर और खेती को बचाने के लिए पहल शुरू की थी। इसके साथ, शराब बंदी आंदोलन, बीज बचाओ आंदोलन और पर्यावरण जागरूकता के लिए मुहिम छेड़ी। आज मैं इस कॉलम में चिपको से प्रेरणा लेकर कर्नाटक में चलने वाली एक महत्वपूर्ण पहल अप्पिको के बारे में करना चाहूंगा। हाल ही में मुझे चिपको आंदोलन से प्रेरणा लेकर अप्पिको आंदोलन के सूत्रधार पांडुरंग हेगड़े से मिलने का मौका मिला। छत्तीसगढ़ के राजिम कस्बे में वे एक बैठक में हिस्सा लेने आए थे। इस दौरान उन्होंने मुझे अप्पिको आंदोलन की प्रेरणादायक कहानी सुनाई। वे देश-दुनिया में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाने की कोशिश कर रहे हैं। आगे बढ़ने से पहले चिपको आंदोलन के बारे में जानना उचित होगा। मुझे एक-दो बार चिपको के प्रणेता सुंदरलाल बहुगुणा को भी देखने व सुनने का मौका मिला है। मुझे उनकी एक बात याद है, जो उन्होंने इन्दौर की एक बैठक में कही थी। उन्होंने कहा था कि पेड़ भी जिंदा हैं,और वे बातें भी करते हैं। अगर उन्हें गले से लगाते हैं तो सुकून मिलता है। चिपको आंदोलन महिलाओं की अगुआई में हुआ था। इसका श्रेय बहुगुणा जी भी महिलाओं को देते थे। वे कहते थे महिलाएं जंगल का महत्व अच्छे से जानती हैं, क्योंकि वह उनका मायका है, जो हर संकट के समय उनके साथ रहता है। जंगल से ही उनकी सब जरूरतें पूरी होती हैं। फल, फूल, शहद, ईंधन, चारा, पानी, रेशे सब कुछ। इस आंदोलन ने वन कटाई पर न केवल रोक लगाने में सफलता पाई थी, पेड़ों से चिपककर उन्हें कटने से बचाया था। बल्कि पूरी दुनिया में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाई थी। पांडुरंग हेगड़े दिल्ली विश्वविद्यालय से सामाजिक कार्य में गोल्ड मेडलिस्ट हैं। अपनी पढ़ाई के दौरान ही हिमालय के चिपको आंदोलन में शामिल हो गए थे और कई गांवों में घूमे थे और कार्यक्रमों में शामिल हुए थे। वे शुरूआत से स्वभाव से घुमक्कड़ हैं, और पर्यावरण के प्रति उनका विशेष लगाव रहा है। लेकिन सुंदरलाल बहुगुणा और चिपको की प्रेरणा से उनकी जीवनधारा ही बदल गई। उन्हें बड़ी नौकरियों के प्रस्ताव मिले, लेकिन उन्होंने उनकी कर्मभूमि कर्नाटक को ही बनाया, जहां के वे रहने वाले हैं।

पांडुरंग हेगड़े जब पढ़ाई के बाद उनके गांव वापस लौटे तब तक घने जंगल उजाड़ में बदल रहे थे। हरे पेड़ कट रहे हैं। इससे पांडुरंग व्यथित हो गए, उन्हें उनका बचपन याद आ गया। बचपन में वे खुद घर के मवेशी जंगल में चराते थे, तब बहुत घना जंगल देखा था। हरे पेड़, शेर, हिरण,जंगली सुअर,जंगली भैंसा, बहुत से पक्षी और तरह-तरह की चिड़ियाएं देखी थीं। पर कुछ सालों के अंतराल में इसमें कमी आई।अस्सी के दशक की बात है। हिमालय की तरह पश्चिमी घाट में वनों की कटाई होने लगी। यह उष्ण कटिबंधीय वन जैव विविधता के लिए जाने जाते हैं। जंगलों पर लोगों की आजीविका व जीवन निर्भर था। लेकिन सरकार की वननीति के चलते यहां की जैव विविधता व पर्यावरण पर विपरीत असर पड़ा। इससे न केवल यहां के लोगों का जीवन कठिन हुआ बल्कि यहां के पीने के पानी और खेती की सिंचाई का भी संकट बढ़ने लगा। चिपको से प्रेरणा लेकर यहां भी अप्पिको (कन्नड़ भाषा का शब्द) नाम से जिसका अर्थ भी चिपको ही होता है, आंदोलन चला। उन्होंने ग्रामीणों के साथ मिलकर हस्तक्षेप करनी की सोची। इसी समय सुंदरलाल बहुगुणा जी कर्नाटक आए और उन्होंने चिपको आंदोलन का अनुभव ग्रामीणों को बताया और कहा कि आप भी इस काम को आगे बढ़ाएं। उनसे प्रेरणा लेकर सालकनी गांव से विरोध शुरू हुआ और आसपास के गांवों में फैला। यहां पदयात्रा की, जिनमें महिलाएं व युवा शामिल थे। इस आंदोलन का विस्तार जल्द ही पड़ोसी गांव सिद्दापुर तालुका तक हो गया।

मोदी पर आरएसएस का छुपा वार

– जगदीश रत्तनानी

कई ऐसे लोग हैं जो इसमें आरएसएस का दोमुंहापन देखते है और जो मानते हैं कि संघ भाजपा का वैचारिक अभिभावक है एवं उसे उन सभी ज्यादतियों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए जो हमने मोदी-युग के दौरान देखी हैं। आखिरकार मोदी आरएसएस की विचारधारा के विद्यार्थी हैं और वे वही ढोल बजा रहे हैं जो संगठन ने उन्हें सिखाया है। बाकी सब जो हो रहा है वह आरएसएस की छत्रछाया में नूरा कुश्ती है और नियंत्रण का अस्थायी बदलाव है। इस बारे में बहुत कुछ लिखा गया है कि 2024 के चुनावों पर नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत का भाषण सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर इशारा करता है। यह कहा जाता है कि भागवत ने उनकी निंदा किए या उनका नाम लिए बिना सब कुछ कह दिया है और अपने इच्छित लक्ष्य के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ा है। आरएसएस प्रमुख ने कहा है कि चुनाव युद्ध नहीं है, दोनों पक्षों को सुनने के लिए एक दृष्टिकोण है और सच यह है कि सेवक वह है जो मयार्दा में रहकर और अहंकार के बिना सेवा करता है। उन्होंने यह भी कहा कि मणिपुर में मुद्दों को एक साल से अधिक समय से उपेक्षित किया गया है। समझदारी का इशारा देने वाले इन शब्दों को और किसकी ओर निर्देशित किया जा सकता है? भागवत के बयान के बाद इसे व्यापक रूप से मोदी विरोधी वक्तव्य के रूप में देखे जाने के बाद अज्ञात स्रोतों के माध्यम से संघ ने यह स्पष्ट करना उचित समझा है कि वह उस व्यक्ति के बारे में ऐसा कोई इरादा नहीं रखता है जिसने अभी तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली है।

कई ऐसे लोग हैं जो इसमें आरएसएस का दोमुंहापन देखते है और जो मानते हैं कि संघ भाजपा का वैचारिक अभिभावक है एवं उसे उन सभी ज्यादतियों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए जो हमने मोदी-युग के दौरान देखी हैं। आखिरकार मोदी आरएसएस की विचारधारा के विद्यार्थी हैं और वे वही ढोल बजा रहे हैं जो संगठन ने उन्हें सिखाया है। बाकी सब जो हो रहा है वह आरएसएस की छत्रछाया में नूरा कुश्ती है और नियंत्रण का अस्थायी बदलाव है। फिर भी यह विचार है कि आरएसएस के हालिया बयानों में कुछ और भी है, खासकर जब वे भाजपा के चुनावी हार के मद्देनजर आते हैं। इसमें आंशिक रूप से निर्मित और जल्दबाजी में उद्घाटित राम मंदिर के निर्वाचन क्षेत्र में सीट खोना भी शामिल है।

यह देखते हुए कि चूंकि भारतीय जनता पार्टी एक व्यक्ति के हाथों में सिमट गई है और अपने दम पर सोच नहीं सकती है तो इन हालातों में यह चुनाव आरएसएस में कुछ वास्तविक पुनर्विचार के लिए ट्रिगर हो सकते हैं। आज यह आरएसएस की उस दुविधा को सामने ला रहा है कि इसके एजेंडा को नरेंद्र मोदी की सरकार ने पूरा किया है, संघ एक ऐसी सरकार से शक्ति और संसाधन प्राप्त कर सकता है जो अब एक दशक से अधिक समय से पूर्ण नियंत्रण में है लेकिन ऐसा लगता है कि यह उस तौर तरीके को नापसंद कर रहा है जिसे इस प्रक्रिया में मोदी ने अपने चारों ओर बनाया है।

दूसरे शब्दों में कहें तो आरएसएस के नजरिए से नीतियां 'अच्छी' हैं लेकिन उन्हें व्यवहार में लाने वाला व्यक्ति सही नहीं है। संघ के द्वितीय सरसंघचालक एमएस गोलवलकर ने एक बार कहा था कि- आरएसएस कार्यकर्ता की 'असाधारणता' ठीक ऐसी होनी चाहिए कि हर कार्यकर्ता खुद को 'साधारण' माने। आज आरएसएस को भाजपा के एक ऐसे प्रधानमंत्री से जूझना होगा जो खुद को इश्वर का भेजा हुआ और गैर-जैविक अवतार बताते हुए स्वयं को प्रधान सेवक कहता है और जो यह कहते नहीं थकता कि वह कितना असाधारण है।

आरएसएस के नजरिए से यह सरल सवाल है कि क्या आपके काम करने के भुगतान की यह बहुत अधिक कीमत है या क्या ऐसा नहीं है? क्या यह आरएसएस की वर्षों पुरानी इच्छाओं के सच होने का स्वर्णिम काल है जिसमें अयोध्या का राम मंदिर, जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को हटाना, अधिकांश राज्यों में गोहत्या पर प्रतिबंध, नागरिक संशोधन अधिनियम (सीएए) का एजेंडा, समान नागरिक संहिता की ओर कदम, ट्रिपल तलाक पर प्रतिबंध आदि शामिल है या ये उस सड़ी हुई संस्कृति के 'उपहार' हैं जो एक ऐसी पार्टी में अंतर्निहित हो गई है जिसने हमें चुनावी बांडों में देखा गया भ्रष्टाचार, लोकतांत्रिक संस्थानों पर कब्जा, भारत की प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में गिरावट, गैर-भाजपा सरकारों को तोड़ने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग और यह सब कुछ अगर बढ़ती संपत्ति और आय असमानता को लेकर है जो राष्ट्र की गर्म बहस बनने और बने रहने का वादा करता है? यह आरएसएस को खुश करने के लिए साध्य हैं लेकिन इस साध्य के साधनों के बारे में क्या कहा जाए? आखिरकार अपने स्वयंसेवकों के बीच चरित्र निर्माण करना संघ का घोषित लक्ष्य है। यह लक्ष्य धनबल, ग्लैमर मार्केटिंग और घृणा की भाषा के युग में कैसे साध्य है जिसमें चुनाव अभियान में जहर घोलने के लिए प्रधानमंत्री मटन, मंगलसूत्र और मुजरा जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं?

गांधी ने हमें बताया कि साध्य की प्राप्ति के लिए साधन भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में वे केवल साधनों के बारे में चिंतित थे, उसके अंत के बारे में नहीं। वे कहते हैं कि, 'साधन सभी चीजों से ऊपर हैं। मैं कहूंगा कि साधन सब कुछ के बाद हैं। साधन जैसा है, अंत वैसा ही होगा। मुझे लगता है कि लक्ष्य की दिशा में हमारी प्रगति हमारे साधनों की शुद्धता के सटीक अनुपात में होगी।'

नई दिल्ली में राष्ट्रीय मंच पर चित्रकूट के बच्चों ने जिले का नाम किया रोशन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। स्टीन ऑडिटोरियम इंडिया हैबिटेट सेंटर नई दिल्ली के सीनेट हाल में युनॉप्स व टेरी संस्था ने उप्र के 11 जिलों के विभिन्न स्कूलों में जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य-स्वच्छता बाबत जागरूकता कार्यक्रम के सफल समापन बाद छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र व जलवायु परिवर्तन से जुड़ी विभिन्न पुस्तकें-बैग देकर सम्मानित किया।

शनिवार को नई दिल्ली में हुई नेशनल कांफ्रेंस में टेरी के वरिष्ठ गवर्नेंस फेलो डॉ नेहा ने कहा कि नहीं चेते तो आने वाले समय में पीने का पानी नहीं मिलेगा। जल संरक्षण को लेकर चिंता जताई। विशिष्ट अतिथि डॉ दीपांकर साहरिया निदेशक टेरी ने भी जलवायु परिवर्तन पर चिंता जताते हुए पेड़ लगाने पर जोर दिया। अध्यक्षता कर रहे युनॉप्स भारत के देश प्रबन्धक विनोद मिश्रा ने विचार रखे। युनॉप्स के कार्यक्रम में विभिन्न देशों के राजदूतों की मौजूदगी रही। इस मौके पर चित्रकूट की अगुवाई श्री गोस्वामी इंटर कालेज छीबों रामनगर की कक्षा 12 की छात्रा अंशिका त्रिपाठी ने नई दिल्ली के राष्ट्रीय मंच पर जोरदार ढंग से अपनी बात रखी। लोगों ने जमकर तालियां बजाई। कार्यक्रम में युनॉप्स व टेरी के निदेशक, विभिन्न देशों के राजनयिकों ने चित्रकूट के सभी छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र, जलवायु परिवर्तन से जुड़ी विभिन्न पुस्तकें-बैग देकर सम्मानित किया। श्री गोस्वामी इंटर कालेज छीबों चित्रकूट की कक्षा 11 की छात्रा गरिमा पाण्डेय ने सूडान के राजदूत डॉ मुआविया अलबुखारी व कोमल कुमार, युगल किशोर जोशी सलाहकार नीति आयोग भारत सरकार को गिफ्ट देकर आभार जताया। काजल दुबे को यूएन के रेजिडेंट कोऑर्डिनेटर शोम्बी शार्प के साथ मंच पर कार्यशाला पुस्तक लांच करने का मौका मिला। समापन पर उत्तर प्रदेश के 11 जिलों के प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने मंच पर मौजूद सभी अंतर्राष्ट्रीय अतिथियों के साथ यादगार तस्वीरें खिचाई। युनॉप्स के चित्रकूट जिला सलाहकार विद्या सागर गुप्ता ने बताया कि युनॉप्स व टेरी संस्था ने उप्र सरकार से मिलकर 11 जिलों के 162 विद्यालयों में कार्यशाला की थी। 27 हजार बच्चों ने हिस्सा लिया था।

प्रमाण पत्र दिखाते बच्चे।

भूटान में पूर्व सांसद मिश्र को मिला समरसता अवार्ड

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भूटान की राजधानी थिम्फू में पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र को राजनीतिक-सामाजिक क्षेत्र में लगातार पचास वर्ष की सेवाओं व भारतीय संसद में अपने कार्यकाल दौरान शत-प्रतिशत मौजूदगी तथा सर्वाधिक डिबेट में हिस्सा लेने और भूटान-नेपाल के साथ भारत से संबंध मजबूत रखने में सक्रिय भूमिका निभाने पर भूटान सरकार ने सम्मानित किया है।

शनिवार को भूटान के धर्मगुरू सागै दोरजी व पूर्व प्रधानमंत्री भूटान सरकार किंग जेंग दोरजी व पूर्व अर्थ मंत्री भूटान सरकार लोकनाथ शर्मा ने भूटान साम्राज्य के ड्रैगन राजा जिग्मे खेसर नागपाल की ओर से भारत-भूटान समरसता रत्न अवार्ड से सम्मानित किया। पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र को भूटान सरकार से समरसता रत्न अवार्ड मिलने पर चित्रकूट-बांदा वासियों ने कहा कि ये गौरव की बात है। आजादी के इतिहास में आज तक कोई सांसद किसी अन्य देश से समरसता अवार्ड नहीं प्राप्त कर सका। ये पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र की कार्यशैली का ही नतीजा है कि ये सम्मान मिला है। इस सम्मान से सभी लोग खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

समरसता अवार्ड दिखाते पूर्व सांसद।

नगर पंचायत ने नहीं खोले फाटक, तड़पकर मरीं हजारों मछलियां

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक बार फिर नगर पंचायत की हठधर्मिता से रामघाट में तड़पकर हजारों मछलियां मर गईं। बारिश के बाद भी जिम्मेदारों ने फाटक नहीं खोले। इससे मछलियों की मौत हो गई। पहले भी कई बार नगर पंचायत ने मछलियों के मामले में यमदूत की भूमिका निभाई है। दोषियों पर कोई कार्यवाही न होने से हौसले बुलंद हैं। बुंदेली सेना ने सतना कलेक्टर से दोषियों पर कार्यवाही की मांग की है।

शनिवार को बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने बताया कि गुरुवार की शाम बारिश होने से नदी का पानी मटमैला हो गया था। शुक्रवार को दिन में चटक धूप से नदी का पानी गर्म हो गया। मटमैले पानी से मछलियां सतह पर आ गईं। गर्म पानी में तड़पकर मर गईं। हजारों तादाद में मछलियों के बच्चे व बड़ी मछलियां बेमौत मारी गईं। रामघाट में नयागांव नगर पंचायत छोटेपुल के फाटक खोल देता तो सभी मछलियां बच जातीं। पहले भी कई बार नगर पंचायत की हठधर्मिता से मछलियां मारी गईं। शुक्रवार को रामघाट में मरी मछलियों की आड़ में दर्जनों शिकारियों ने जमकर मछलियों का शिकार किया। दो बार सीतापुर चैकी पुलिस ने शिकारियों को खदेडा। देर शाम तक नदी से मछलियों के शिकार का तमाशा चलता रहा। दर्जनों तमाशबीन छोटे पुल में दिखाई पडे। बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष ने सतना कलेक्टर से मांग की है कि मछलियों की मौत के दोषियों पर कार्यवाही की जाये। मछलियों का शिकार करने वालों पर 20 हजार का जुर्माना व सजा का प्राविधान किया जाये।

बुंदेली सेना ने सतना डीएम से दोषियों पर की कार्यवाही की मांग

दो वांछित दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में पुलिस ने दो वारंटी दबोचे हैं। शनिवार को प्रभारी निरीक्षक सरधुवा आशुतोष तिवारी की अगुवाई में दरोगा राजेन्द्र प्रसाद ने सिपाही धर्मेन्द्र, मुकद्दर सिंह ने एससी/एसटी एक्ट वांछित अर्जुन कुमार पुत्र विशम्भर प्रजापति बक्टा बुजुर्ग को गिरफ्तार किया।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक रैपुरा श्याम प्रताप पटेल की अगुवाई में दरोगा रविकान्त राय ने पॉक्सो एक्ट के वांछित जागेश पुत्र श्यामलाल रामपुर को गिरफ्तार किया।

रोप-वे से बचाव को एनडीआरएफ ने किया माक अभ्यास

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। 11 एनडीआरएफ वाराणसी की टीम ने केबल कार (रोप-वे) आपात स्थिति पर संयुक्त अभ्यास किया। आपदा जोखिम न्यूनीकरण व प्रबंधन योजना के तहत अपर जिलाधिकारी एफआर उमेश चंद्र निगम के निर्देश पर डीआईजी एनडीआरएफ मनोज कुमार शर्मा की टीम ने विभिन्न संस्थानों व हितधारकों को मजबूत बनाने को आपदा से बचाव व प्रबंधन को बडे पैमाने पर मॉक अभ्यास, क्षमता निर्माण व जागरूकता अभियान चला रही है। शिक्षण संस्थानों में आपदा से बचाव को स्कूलों में स्कूल सुरक्षा व प्रशिक्षण दे रही है। देश में पिछले वर्ष झारखंड के देवघर स्थित त्रिकूट रोप-वे हादसे के मद्देनजर 11 एनडीआरएफ वाराणसी टीम ने उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के सभी केबल कार रोप-वे टीम व सम्बंधित जिला प्रशासन के साथ संयुक्त मॉक अभ्यास कर रही है।

इसी कड़ी में शनिवार को उप कमांडेंट संतोष कुमार की देखरेख में टीम कमांडर इं रामयज्ञ शुक्ला व रेस्क्यू टीम ने जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने रोप-वे टीम के साथ मॉक अभ्यास किया। लक्ष्मण पहाड़ी में केबल कार जमीन से 90 फीट ऊंचाई पर किसी तकनीकी समस्या से रोप-वे रूकने पर कार के अंदर फंसे यात्री को बचाया।

मॉक अभ्यास में एनडीआरएफ व जिला प्रशासन के अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग, लक्ष्मण झूला रोप-वे के कर्मचारी, पुलिस विभाग, वन विभाग, फायर विभाग, पर्यटक विभाग के कर्मचारी तथा जनता की मौजूदगी में किया।

माक अभ्यास करती एनडीआरएफ।

कोतवाली कर्वी पुलिस-एसओजी टीम ने ट्रक ट्रेलर लूट का किया खुलासा

तमंचा-कारतूस, घटना में प्रयुक्त कार बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी पुलिस व एसओजी टीम ने ट्रक ट्रेलर लूट की घटना का खुलासा किया है। चार लूटेरों को लूट के 22 चक्का ट्रक ट्रेलर सीमेंट लदा, घटना में प्रयुक्त कार, मोबाइल फोन, तमंचा 315 बोर व कारतूस समेत गिरफ्तार किया है।

शनिवार को पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह पुलिस कार्यालय राघव प्रेक्षागार में पत्रकारों से रूबरू हुए। उन्होंने बताया कि कोतवाली कर्वी व एसओजी संयुक्त टीम ने राधे उर्फ फुल्लू पुत्र रामसेवक निवासी मुहम्मदपुर असवा कोखराज जिला कौशाम्बी, जाकिर पुत्र मो साकिर लाइन बाबा दरगाह नई बाजार भरवारी कोखराज कौशाम्बी, राधेश्याम पुत्र जीवनलाल सरोज मुहम्मदपुर असवा कोखराज कौशाम्बी व अंकेश पुत्र सुरेश सरोज मुहम्मदपुर असवा कोखराज कौशाम्बी को दबोचकर लूट की घटना का खुलासा किया है। इन सबका आपराधिक इतिहास भी है। पुलिस ने इन्हें चकजाफर भरकोर्रा मोड ताम्रबनी मोड़ से मूरतगंज कौशाम्बी मेला बाग मैदान से दबोचा है।

ज्ञात है कि 17 जून को हरिओम गुप्ता पुत्र स्व मंगल शरण गुप्ता संग्राम कॉलोनी जिला सतना मप्र ने कोतवाली कर्वी में रिपोर्ट लिखाई थी कि 15 जून को सीमेंट लदा ट्रेलर पूर्वान्ह साढे 11 बजे दिन में ड्राइवर, खलासी ने नोइंट्री सोनेपुर से अज्ञात चोरों ने रात डेढ बजे चोरी कर ले गये थे। वाहन का पता लगाने पर पता न चलने पर कोतवाली में रिपोर्ट लिखाई थी। खलासी इन्द्रबहादुर के बयान से पता चला कि चार लोग काले रंग की कार से मारपीट कर ट्रेलर की चाभी, मोबाइल फोन छीनकर ट्रेलर माल समेत कर्वी होते हुए राजापुर रोड की ओर भागे हैं। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि पकडे लुटेरों ने पूंछताछ व सीसीटीवी फुटेज देखने पर बताया कि वे सभी पैसों के लालच में सोनेपुर से सीमेंट लदा ट्रक ट्रेलर लूट ले गये थे। लूटे ट्रेलर को मूरतगंज कस्बा में मेला बाग मैदान में छिपा दिया था। निगरानी को राधेश्याम, अंकेश व नीलू को लगाया था। पुलिस जब मौके पर पहुंची तो राधेश्याम पुत्र जीवनलाल सरोज व अंकेश पुत्र सुरेश सरोज पकड में आये। नीलू पुत्र तीरथ सरोज अंधेरे में भागने में सफल रहे। माल बरामदगी व आर्म्स एक्ट की धारायें बढाई। टीम में कोतवाल कर्वी उपेन्द्र प्रताप सिंह, प्रभारी निरीक्षक एसओजी एमपी त्रिपाठी, अपराध निरीक्षक लाखन सिंह, सिपाही ज्ञानेश मिश्रा, दरोगा अंशुल कुमार, सिपाही पवन राजपूत, राहुल देव, रोहित सिंह, महिला सिपाही नीतू द्विवेदी, रोशन सिंह, सिपाही गोलू भार्गव, राघवेन्द्र शामिल रहे।

पत्रकारों से बात करते एसपी व लुटेरों के साथ पुलिस टीम।

करंट से व्यवसायी की हुई मौत

अखंड भारत संदेश

पहाड़ी/चित्रकूट। पहाड़ी थाने के कस्बा पहाड़ी के अनिल कुमार साहू (30) पुत्र फूलचंद्र साहू मेन चैराहे पर सब्जी मसाला व तम्बाकू दुकान कर परिवार का पालन-पोषण करता था।

रोज की भांति शुक्रवार की शाम छह बजे दुकान में बैठे ग्राहकों को सामान दे रहा था। बिजली आने पर पंखा चालू करने गया तो करंट की चपेट में आ गया। उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गये। हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर किया। रास्ते में उसकी मृत्यु हो गई। शनिवार को मृतक का पोस्टमार्टम हुआ। उसका विवाह सात वर्ष पहले मऊ की सीमा देवी से हुआ था। मृतक के एक पुत्र पवन व पुत्री आयुषी है। तीन भाइयों में सबसे छोटा था। दोनों बड़े भाई दुर्गा व राजकिशोर अलग रहते हैं।

मृतक का फाइल फोटो।

नौ साइबर पीडितों के लौटाये 373971 रुपये

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बढ़ते साइबर अपराध रोकने व आम जनता को राहत दिलाने की गरज से जारी अभियान में पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर साइबर अपराध नौ पीड़ितों के 373971 रुपये वापस कराये।

शनिवार को एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ सिटी राजकमल की देखरेख में साइबर सेल प्रभारी निरीक्षक निशीकान्त राय की टीम ने माह जून में नौ साइबर पीड़ितों के 373971 रुपये खातों में लौटाये हैं। साइबर सेल में तैनात साइबर सेल प्रभारी निरीक्षक निशीकान्त राय, सिपाही सर्वेश कुमार, प्रशांत कुमार के प्रयास से ये रुपये बरामद कराये हैं।

ज्ञात है कि इन दिनों आम जनता बैंक आने-जाने व बैंकिग औपचारिकताओं में समय बचाने को डिजिटल लेन-देन करती है। आनलाइन बैंकिंग सेवा का लाभ लेने दौरान जरा सी चूक पर लोग साइबर ठगी के शिकार हो रहे हैं। आनलाइन बैंकिंग सेवा का लाभ लेने वालों को जरूरी है कि सावधानी अपनाकर साइबर ठगी से बच सकते हैं। साइबर फ्राड होने पर हेल्पलाइन नम्बर 1930 पर काल करें।

रुपये मिलने पर साइबर टीम को गुलदस्ता देता पीडित।

26 से 31 जुलाई तक चलेगा बाल स्वास्थ्य पोषण अभियान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने बताया कि विटामिन ए सम्पूर्ण अभियान स्वास्थ्य व आईसीडीएस विभाग के सहयोग से संचालित बाल स्वास्थ्य पोषण 26 जून से 31 जुलाई तक चलेगा। विटामिन ए सम्पूर्ण टीकाकरण का अभिन्न अंग है, जो प्रत्येक सप्ताह बुधवार व शनिवार को नियमित सत्रों में जून-जुलाई व दिसम्बर में दो चरणों में होता है। शनिवार को डीएम अभिषेक आनन्द ने बताया कि बाल स्वास्थ्य पोषण माह नौ माह से पांच वर्ष के बच्चों में रोगों से लडने की क्षमता में वृद्धि करता है। पांच वर्ष तक के बच्चों में मृत्यु दर में कमी लाता है। रतौंधी-कुपोषण से बचाव-उपचार, टीकाकरण दौरान लक्षित बच्चों समेत छूटे बच्चों का टीकाकरण, आयोडीन युक्त नमक के प्रयोग से बच्चों में शारीरिक विकृतियां नहीं आती। पिछले वर्षों की भांति विटामिन ए सम्पूर्ण अभियान 26 जून से शुरू होगा। लक्ष्यों की प्राप्ति को अभियान दौरान स्वास्थ्य एवं आईसीडीएस विभाग के सहयोग से सेवायें दी जा रही हैं।

मानिकपुर पुलिस ने छह जुआरियों को दबोच बरामद किये 29500 रुपये

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों की रोकथाम को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर विनोद कुमार शुक्ल की अगुवाई में दरोगा यूटी पवन चैधरी की टीम ने मुखबिर की सूचना पर कस्बे में छापेमारी कर छह जुआरियों को दबोचा है। शनिवार को पुलिस टीम ने छापेमारी कर अशरफ नवाज पुत्र मो नवाज, रसूल मो पुत्र नवी बक्श, सोनू यादव पुत्र दिनेश यादव निवासी महावीरनगर मानिकपुर, लवकुश पुत्र लल्लू द्विवेदी शास्त्रीनगर, विजय कुमार पुत्र नत्थू प्रसाद आर्यनगर, धनकुमार पुत्र रामहेत यादव ऐलहा बढैया को दबोचकर जुआ खेलते रंगेहाथ दबोचा है। ये ताश के पत्तों से हारजीत की बाजी लगा रहे थे। मौके से मालफड़ से 27600 रुपये व ताश के 52 पत्ते, जामा तलाशी से 19 सौ रुपये बरामद कर जुआरियों पर जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा पवन चैधरी, सिपाही विनोद यादव, भास्कर शुक्ला, अमित द्विवेदी शामिल रहे।

पुलिस गिरफ्त में जुआरी।

एसपी ने समस्या सुन दिये निस्तारण के निर्देश

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह की अध्यक्षता में थाना मानिकपुर में थाना समाधान दिवस पर फरियादियों की समस्यायें सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये। भूमि विवाद के मामलों को पुलिस व राजस्व टीम मौके पर जाकर निस्तारण करें। इस मौके पर तहसीलदार मानिकपुर अवधेश कुमार गुप्ता, प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार शुक्ल, पीआरओ प्रदीप कुमार पाल व राजस्व तथा पुलिस विभाग के अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

इसी क्रम में एडीएम एफआर उमेशचन्द्र निगम व एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी ने थाना सरधुवा व थाना पहाड़ी में समाधान दिवस में फरियादियों की समस्यायें सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये। इस मौके पर थाना सरधुवा प्रभारी निरीक्षक आशुतोष तिवारी, थाना पहाड़ी प्रभारी निरीक्षक श्रीमती रीता सिंह, राजस्व व पुलिस विभाग के अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे। थाना समाधान दिवस राजापुर में सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने फरियादियों की शिकायतें सुनकर निस्तारण के निर्देश दिये।

मानिकपुर में समस्यायें सुनते एसपी।

एक जुलाई से बीएनएस बाबत दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एडवोकेट काउंसिल ऑफ इंडिया के जिला प्रभारी रामप्रकाश पाण्डेय एड ने एक जुलाई से आईपीसी की धाराओं में बदलाव बाबत अधिवक्ताओं को बताया कि आईपीसी की जगह अब भारतीय न्याय संहिता लागू हो जायेगी। पहले की भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की धारायें अब भारतीय न्याय संहिता की धाराओं में बदलाव किया गया है। शनिवार को उन्होंने जिला अदालत के अधिवक्ताओं को बताया कि 302 की जगह 103 बीएनएस, 304(ए) की जगह 106 बीएनएस, 304(बी) की जगह 80 बीएनएस, 306 की जगह 108 बीएनएस, 307 की जगह 109 बीएनएस, 309 की जगह 226 बीएनएस, 286 की जगह 287 बीएनएस, 294 की जगह 296 बीएनएस, 509 की जगह 79 बीएनएस, 323 की जगह 115 बीएनएस, आर/डब्ल्यू 34 की जगह 3(5) बीएनएस, 149 की जगह 190 बीएनएस, 324 की जगह 118(1) बीएनएस, 325 की जगह 118(2) बीएनएस धारायें एक जुलाई से प्रभावी होंगी। इसी तरह से अन्य धाराओं के बारे में उन्होंने जानकारी दी है।

जानकारी देते अधिवक्ता रामप्रकाश पाण्डेय।

रूस को उत्तर कोरिया पर प्रतिबंधों का पालन करना चाहिए: संयुक्त राष्ट्र महासचिव

युनाइटेड नेशंस। रूस और उत्तर कोरिया के लगातार गहराते संबंधों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा है कि रूस को उत्तर कोरिया पर संयुक्त राष्ट्र की तरफ से लगाए गए प्रतिबंधों का पालन करना चाहिए। रूसी संघ सहित किसी भी देश के साथ डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (डीपीआरके) के संबंध में उसपर लागू प्रतिबंधों का पालन करना होगा।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुटेरेस ने शुक्रवार को पत्रकारों से यह बात तब कही जब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन द्वारा बुधवार को ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर का आरोप है, जिसमें यूक्रेन के खिलाफ इस्तेमाल के लिए प्योंगयांग की तरफ से रूस को हथियार हस्तांतरित किए जाएंगे। हालांकि मॉस्को और प्योंगयांग ने आरोपों से इनकार किया है।

अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया और जापान के अनुरोध पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् 28 जून को बैठक करेगा जिसमें परिषद के प्रस्तावों के उल्लंघन को लेकर प्योंगयांग की तरफ से हथियारों के हस्तांतरण पर चर्चा होगी। उत्तर कोरिया अपने परमाणु और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों को लेकर 2006 से संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों के अधीन है। इसके बावजूद उत्तर कोरिया को रूस का लगातार समर्थन मिलता रहा है।

दरअसल, उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोन उन के तौर-तरीकों से निबटने में पिछले कई वर्षों से 15 सदस्यीय सुरक्षा परिषद् का विभाजित रुख है। रूस और चीन का कहना है कि अधिक प्रतिबंधों से मदद नहीं मिलेगी और वे प्रतिबंधों में ढील चाहते हैं। दोनों देशों का यह भी कहना है कि अमेरिका और दक्षिण कोरिया के संयुक्त सैन्य अभ्यास ने प्योंगयांग को उकसाया है। हालांकि वाशिंगटन ने बीजिंग और मॉस्को पर उत्तर कोरिया को और अधिक प्रतिबंधों से बचा कर उसका हौसला बढ़ाने का आरोप लगाया है।

बांग्लादेश: पूर्व पीएम खालिदा जिया की तबीयत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री और बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की अध्यक्ष (बीएनपी) की अध्यक्ष खालिदा जिया के अचानक बीमार पड़ने के बाद शनिवार तड़के उन्हें राजधानी के एवरकेयर अस्पताल में भर्ती कराया गया। खालिदा के निजी चिकित्सक प्रोफेसर एजेडएम हुसैन के मुताबिक, शनिवार तड़के तीन बजे उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें क्रिटिकल केयर यूनिट में भर्ती कराया गया है। 79 वर्षीय खालिदा जिया लंबे समय से विभिन्न गंभीर बीमारियों से जूझ रही हैं, जिनमें लिवर सिरोसिस, गठिया, मधुमेह और किडनी, फेफड़े और हृदय से संबंधित समस्याएं शामिल हैं। 2020 में जेल से सशर्त रिहाई के बाद से बीएनपी प्रमुख को हृदय रोग विशेषज्ञ प्रोफेसर शहाबुद्दीन तालुकदार की अध्यक्षता में मेडिकल बोर्ड की देखरेख में चिकित्सा देखभाल मिल रही है।

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में आतंकी हमले में पांच पाकिस्तानी सैनिक मारे गए

नई दिल्ली। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में हुए आतंकी हमले में पांच पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। अभी तक किसी भी आतंकी समूह ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। पाकिस्तानी सेना की मीडिया विंग इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस ने दी। उन्होंने बताया कि आतंकियों ने कुर्रम जिले में सुरक्षाबलों के एक वाहन पर विस्फोट किया। इसमें पांच सैनिकों की मौत हो गई। इन सैनिकों की उम्र 24 से 33 वर्ष के बीच है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पंजाब प्रांत की पुलिस ने 22 आतंकियों को गिरफ्तार किया है।

नेपाल के एक उप प्रधानमंत्री ने दूसरे उप प्रधानमंत्री पर साधा निशाना

काठमांडू। नेपाल में प्रचंड के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ गठबंधन सरकार के एक उप प्रधानमंत्री ने दूसरे उप प्रधानमंत्री पर जमकर निशाना साधा है। उप प्रधानमंत्री नारायणकाजी श्रेष्ठ ने शनिवार को काठमांडू में एक कार्यक्रम में कहा कि सरकार से बाहर रहकर बड़ी-बड़ी बातें करने वाले रवि लामिछाने मंत्री बनने के बाद कोई ठोस काम नहीं कर पा रहे हैं। सरकार से बाहर रहकर जिस तरह का बयान लामिछाने देते थे उस तरह से मंत्री बनने के बाद उनका कार्यान्वयन बिलकुल नगण्य है। श्रेष्ठ ने कहा कि जब वे गृहमंत्री थे उस समय भ्रष्टाचार के जितने मामलों पर उन्होंने जांच और उसके आधार पर कानूनी कार्रवाई आगे बढ़ाई थी वो सब इस समय ठंडे बस्ते में है। नारायणकाजी श्रेष्ठ, प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड' की पार्टी सीपीएन (एमसी) कोटे से उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री हैं। वहीं गठबंधन सरकार के सहयोगी राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के अध्यक्ष रवि लामिछाने उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री हैं। उल्लेखनीय है कि प्रचंड सरकार में इस समय चार उप प्रधानमंत्री हैं। श्रेष्ठ ने गृहमंत्री लामिछाने पर सिर्फ मीडिया स्टंट करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि लामिछाने और उनकी पार्टी के बांकी मंत्री सिर्फ मीडिया स्टंटबाजी के लिए काम करते हैं। जनता को राहत देने वाला और भ्रष्टाचार के मामले में उनकी कार्रवाई बिल्कुल शून्य है। पिछली बार उनके कार्यकाल में भ्रष्टाचार के जितने मुद्दों को आगे बढ़ाया गया था उनमें से किसी पर भी कार्रवाई आगे नहीं बढ़ाने से लामिछाने की कथनी और करनी में फर्क साफ नजर आ रहा है। श्रेष्ठ ने गृहमंत्री पर सिर्फ अपने बचाव में काम करने और अपने लोगों को बचाने का आरोप लगाया है।

ईरान में होगी नेपाल और भारत के विदेश मंत्रियों की मुलाकात

काठमांडू। नेपाल और भारत के विदेश मंत्रियों के बीच मुलाकात ईरान की राजधानी तेहरान में तय की गई है। यह मुलाकात 24-25 जून को तेहरान में होने वाले एशियन को-ऑपरेशन डॉयलाग (एसीडी) से इतर होगी। एसीडी में हिस्सा लेने के लिए नेपाल के विदेश मंत्री नारायणकाजी श्रेष्ठ आज रात साढ़े 11 बजे तेहरान के लिए रवाना होंगे। नेपाल के विदेश मंत्रालय के मुताबिक 24-25 को होने वाले इस डॉयलाग के दौरान विदेश मंत्री श्रेष्ठ की मुलाकात कई देशों के विदेश मंत्रियों से होगी। डॉयलाग से इतर विदेश मंत्री श्रेष्ठ की मुलाकात भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के साथ तय है। डॉ. जयशंकर के भारत के दूसरी बार विदेश मंत्री बनने के बाद नेपाल के विदेश मंत्री श्रेष्ठ के साथ फोन पर बात हुई थी। उसी समय दोनों नेताओं के बीच तेहरान में मुलाकात की बात तय की गई थी।

चुनाव से पहले ट्रंप का विदेशी छात्रों से बड़ा वादा, दिलाएंगे ऑटोमेटिक ग्रीन कार्ड

वाशिंगटन : पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आव्रजन पर अपने रुख को नरम करते हुए अमेरिकी कॉलेजों से स्नातक करने वाले विदेशी छात्रों को ऑटोमेटिक ग्रीन कार्ड देने का वादा किया है. उनका मानना है कि भारत और चीन जैसे अपने गृह देशों में लौटने वाले छात्रों को रोका जा सकेगा. ट्रंप ने अप्रवासी-विरोधी बयानबाजी से दूरी नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से पहले बनाई है, जिसमें अप्रवासन और अवैध अप्रवासियों का निर्वासन मतदाताओं के लिए प्रमुख मुद्दों में से एक है. हालांकि, ट्रंप ने हमेशा योग्यता-आधारित कानूनी आव्रजन प्रणाली का समर्थन किया है.

इस बारे में 78 वर्षीय ट्रंप ने ऑल इन पॉडकास्ट में कहा कि मैं जो करना चाहता हूं और जो करूंगा, वह यह है कि आप कॉलेज से स्नातक हों. साथ ही उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि आपको अपने डिप्लोमा के हिस्से के रूप में इस देश में रहने के लिए ग्रीन कार्ड स्वतः ही ग्रीन कार्ड मिल जाना चाहिए. बता दें कि ग्रीन कार्ड, जिसे आधिकारिक तौर पर स्थायी निवासी कार्ड के रूप में जाना जाता है. यह एक पहचान दस्तावेज है जो दर्शाता है कि व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थायी रूप से निवास करता है. पॉडकास्ट का संचालन चार उद्यम पूंजीपतियों द्वारा किया गया. इसमें शामिल चमथ पालीहापितिया, जेसन कैलाकानिस, डेविड सैक्स और डेविड फ्रीडबर्ग में से तीन अप्रवासी हैं. ट्रंप की यह टिप्पणी उस समय आई जब कैलाकैनिस ने उन पर दबाव डाला कि वे हमसे वादा करें कि आप हमें दुनिया भर से सर्वश्रेष्ठ और प्रतिभाशाली लोगों को अमेरिका में आयात करने की अधिक क्षमता प्रदान करेंगे. रिपब्लिकन पार्टी के संभावित उम्मीदवार ट्रंप ने उन घटनाओं पर भी दुख जताया, जिनमें लोग किसी शीर्ष कॉलेज या कॉलेज से स्नातक हुए थे और वे यहां रहना चाहते थे, उनके पास कंपनी के लिए एक योजना थी, एक अवधारणा थी, लेकिन वे चीन वापस चले गए.

उन्होंने कहा कि और वे हजारों-हजारों लोगों को रोजगार देकर अरबपति बन गए, और यह काम यहां भी किया जा सकता था. ट्रंप ने जवाब में कहा कि मैं आपको बस इतना बता दूं कि यह बहुत दुखद है जब हम हार्वर्ड, एमआईटी, महानतम स्कूलों और छोटे स्कूलों से लोगों को खो देते हैं जो अभूतपूर्व स्कूल हैं और जो मैं करना चाहता था, और मैंने यह किया भी होता, लेकिन फिर हमें कोविड समस्या का समाधान करना पड़ा. ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल की नीति को दोहराया, जिसमें विदेशी छात्रों को एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) क्षेत्र में उच्च शिक्षा संस्थान से डिग्री प्राप्त करने के बाद ग्रीन कार्ड दिया जाना शामिल था।

राजनीतिक अस्थिरता देश के विकास के लिए घातक: पोखरेल

काठमांडू। नेपाल में सत्तारूढ़ गठबंधन के सबसे बड़े दल नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एमाले) के महासचिव शंकर पोखरेल ने देश में राजनीतिक स्थिरता के लिए दो दलीय व्यवस्था की वकालत की है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता देश के विकास के लिए घातक है।

पोखरेल ने शनिवार को पार्टी के एक कार्यक्रम में कहा कि देश में राजनीतिक अस्थिरता का सबसे बड़ा कारण बहुदलीय व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि संसद में सबसे बड़ी पार्टी विपक्ष में है और दूसरी सबसे बड़ी पार्टी भी सरकार में होते हुए भी नेतृत्व नहीं कर पा रही है। पोखरेल ने कहा कि जब तक छोटी-छोटी पार्टियां रहेंगी तब तक देश में राजनीतिक स्थिरता आ ही नहीं सकती है।

पोखरेल ने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता देश के विकास में बाधक होती है। राजनीतिक अस्थिरता के लिए बहुदलीय व्यवस्था जिम्मेदार है। राजनीतिक स्थिरता के बिना देश का विकास नहीं हो सकता है। उनका तर्क है कि देश में दो दलीय व्यवस्था रहने पर एक दल सत्ता में और दूसरा दल विपक्ष में रहेगा तो कई राजनीतिक समस्याओं का समाधान आसानी से हो सकता है। पोखरेल ने कहा कि संविधान संशधन के जरिए दो से चार सदस्यों वाले छोटे दलों की व्यवस्था को खत्म किया जाना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि नेपाल की 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में मुख्य विपक्षी दल नेपाली कांग्रेस के 88 सदस्य हैं, जबकि नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एमाले) के 79 सदस्य हैं। प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड' की पार्टी नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी केंद्र) के सदस्यों की संख्या 32 है।

दक्षिण चीन में भीषण बाढ़ और भूस्खलन से 47 की मौत

बीजिंग। चीन के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित गुआंग्डोंग प्रांत में भारी बारिश के कारण आई भीषण बाढ़ व भूस्खलन में कम से कम 47 लोगों की मौत हो गई है। चीन की सरकारी मीडिया ने शुक्रवार को यह खबर दी।

सरकारी प्रसारणकर्ता सीसीटीवी ने शुक्रवार दोपहर में कहा कि मीझोउ शहर में 38 अन्य लोगों की मौत की पुष्टि हुई है।

इसने कहा कि इसी शहर में इसके पहले नौ अन्य लोगों की मौत हुई थी।

सरकारी प्रसारणकर्ता सीसीटीवी ने शुक्रवार दोपहर में कहा कि मीझोउ शहर में 38 अन्य लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। इसने कहा कि इसी शहर में इसके पहले नौ अन्य लोगों की मौत हुई थी। इसी हफ्ते की शुरूआत में, मेझाऊ शहर से 10,000 से ज्यादा लोगों को सुरक्षित निकाला गया था। वहीं 1 लाख 30 हजार से ज्यादा लोग बिजली की किल्लत से जूझ रहे थे। बाढ़ के हालात को देखते हुए शहर के प्रशासन ने बाढ़ नियंत्रण की आपातकालीन कार्रवाई को सबसे गंभीर स्तर यानि लेवल-1 पर पहुंचा दिया। चीन में बाढ़ नियंत्रण की आपातकालीन व्यवस्था में चार स्तर होते हैं। आसपास के दक्षिणी प्रांत फुज़ियान में भी भारी बारिश हुई है। वहां अब तक कम से कम 4 लोगों की मौत हो चुकी है और 40 ज़िलों के लगभग 5 लाख 86 हजार लोग इससे प्रभावित हुए हैं।

न्यू मैक्सिको में भारी बारिश और अचानक बाढ़ की चेतावनी, लोगों को अनिवार्य पलायन के निर्देश

लास वेगास: न्यू मैक्सिको में भारी बारिश और अचानक बाढ़ की चेतावनी के कारण अधिकारियों ने कुछ अनिवार्य निकासी के आदेश दिए हैं, साथ ही विस्थापित निवासियों के लिए आश्रय स्थल बनाए गए हैं. राष्ट्रीय मौसम सेवा कार्यालय ने शुक्रवार रात से शनिवार सुबह तक अचानक बाढ़ की आपात स्थिति की घोषणा की प्रभावित क्षेत्रों में लास वेगास शहर, न्यू मैक्सिको और अल्बुकर्क के पास के समुदाय शामिल हैं. मौसम सेवा ने बताया कि शुक्रवार देर रात तक 2 इंच (5 सेंटीमीटर) बारिश हो चुकी थी और रात भर में 1.5 इंच (3.8 सेंटीमीटर) तक अतिरिक्त बारिश होने की उम्मीद है.

राफा के करीब राहत शिविर पर बड़ा हमला, 22 लोगों की मौत, 45 घायल, रेडक्रॉस कार्यालय को भी नुकसान

जेनेवा। राफा शहर के उत्तरी हिस्से में फिलिस्तीनी विस्थापितों के बीच राहत कार्यों में जुटे रेडक्रॉस का कार्यालय भी शुक्रवार को एक हमले में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। विस्थापितों से घिरे इस इलाके में दागे गए गोले में 22 लोगों की मौत हो गई है। इस दौरान घायल 45 लोगों को रेडक्रॉस फील्ड अस्पताल ले जाया गया।

रेडक्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति के मुताबिक 21 जून को एक हमले में 22 लोग मारे गए। हमले में रेडक्रॉस का गाजा स्थित कार्यालय क्षतिग्रस्त हो गया। रेडक्रॉस का यह कार्यालय तंबुओं में रह रहे सैकड़ों विस्थापित लोगों से घिरा हुआ है।

हालांकि आईसीआरसी ने यह नहीं बताया कि हमले के लिए कौन जिम्मेदार है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उसकी तरफ से जारी की गई जानकारी में कहा गया कि हमले के दौरान दागे गए गोले से आईसीआरसी कार्यालय की इमारत को नुकसान पहुंचा है। गोलाबारी के बाद 22 शव और 45 घायलों को रेडक्रॉस फील्ड अस्पताल ले जाया गया।

हमास द्वारा संचालित क्षेत्र के स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से भी कहा गया है कि गोलाबारी में 25 लोग मारे गए और 50 घायल हुए। हमले के लिए हमास ने इजराइल को जिम्मेदार ठहराया। मंत्रालय की तरफ से कहा गया है कि इजरायली गोलाबारी ने अल-मवासी क्षेत्र में विस्थापितों के तंबुओं को निशाना बनाया जो आईसीआरसी बेस के आसपास है।

जबकि इजरायली रक्षा बल के प्रवक्ता ने घटना में किसी भी भूमिका से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि घटना की समीक्षा की जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि गाजा में कोई भी जगह सुरक्षित नहीं है और मानवीय स्थितियां गंभीर हैं। लोग पर्याप्त भोजन, पानी या चिकित्सा आपूर्ति के बिना तंबूओं में ठिकाना बनाए हुए हैं। हालांकि इजराइल का कहना है कि वह हमास के लड़ाकों और बुनियादी ढांचे को निशाना बना रहा है और सामान्य नागरिकों की मौत को कम करने की कोशिश कर रहा है।

हमास के खात्मे के लिए इजराइल की मुहिम नौवें महीने में पहुंच गई है। इस दौरान गाजा में विनाश के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इजराइल को निशाना बनाया जा रहा है। इजराइली हमलों में गाजा में 37,100 से अधिक लोग मारे गए हैं। हमास के 7 अक्टूबर के हमले के बाद इजराइल ने उसके खात्मे के लिए गाजा में व्यापक अभियान शुरू किया था।

हमास के आतंकियों ने दक्षिणी इजराइल में हमला किया था, जिसमें लगभग 1,200 लोगों की मौत हो गई थी और लगभग 250 लोगों को आतंकियों ने बंधक बना लिया था।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।